www.ghoonghatkibagawat www.ghoonghatkibagawat ghoonghatkibagawat37@gmail.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 24 अंक : 43 गोरखपुर, 11 मई 2025 रविवार पृष्ठ : 6 मूल्य : 2

भारतीय सेना ने पाकिस्तान के झूठ का किया पदार्फाश



नई दिल्ली । भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर हो गया है। इससे पहले गत शनिवार को भी दोनों देशों की तरफ से एक-दूसरे पर हवाई हमले हुए। भारत के हवाई हमले में पाकिस्तान को काफी नुकसान हुआ है। लेकिन पाकिस्तान अपने नागरिकों से झूठ बोला। शनिवार शाम को प्रेस कांफ्रेंस कर भारतीय सेना ने पाकिस्तान के झूठ का पदार्फाश किया और दुश्मन देश की पोल खोलकर रख दी।

पाकिस्तान का सबसे बड़ा झूठ यह है कि उसने दावा किया कि वह भारत के सैन्य ठिकानों को काफी नुकसान पहुंचाया। विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने कहा कि हमारे सैन्य ठिकानों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। पाकिस्तान का दावा झूठा है। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि पाकिस्तान ने दावा किया कि उसने अपने जेएफ-17 से हमारे एस-400 और ब्रह्मोस मिसाइल बेस को नुकसान पहुंचाया, जो पूरी तरह से गलत है।

पाकिस्तान का दूसरा सबसे बड़ा झूठ यह है कि उसने दावा किया कि सिरसा, जम्मू, पठानकोट, भटिंडा, नलिया और भुज में हमारे हवाई अड्डों को नुकसान पहुंचाया गया, उसकी यह दावा भी पूरी तरह से गलत है। सेना ने साफ तौर पर कहा कि हमारे हवाई अड्डे पूरी तरह सुरक्षित हैं। पाकिस्तान के हमले में कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। पाकिस्तान की मिसाइलें और ड्रोन को हवा में ही मार गिराया गया।

पाकिस्तानी आर्मी का तीसरा सबसे बड़ा झूठ यह है कि चंडीगढ़ और व्यास में हमारे गोला-बारूद डिपो को नुकसान पहुंचाया गया, यह भी पूरी तरह से गलत है। सेना ने कहा कि हमारे आयुध डिपो पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

पाकिस्तान ने दावा किया कि भारत की तरफ से उसकी मस्जिदों और नागरिकों को निशाना बनाया गया। यह भी पूरी तरह से झूठ है। विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने कहा कि हमारे सैन्य अभियान आतंकवादी ठिकानों पर केंद्रित रहे। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि पाकिस्तान ने झूठे आरोप लगाए कि भारतीय सेना ने मस्जिदों को नुकसान पहुंचाया। मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूं कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और हमारी सेना भारत के संवैधानिक मूल्य का एक बहुत ही सुंदर प्रतिबिंब है।

पाकिस्तान ने यह भी झूठ बोला कि भारत की मिसाइलें अफगानिस्तान के इलाकों में गिरी हैं। पाकिस्तान के झूठ का पदार्फाश खुद अफगान रक्षा मंत्रालय ने किया। तालिबान ने कहा कि अफगान धरती पर भारत की मिसाइल का पाकिस्तान द्वारा लगाए जा रहे आरोप पूरी तरह झूठे हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय ने भी पाकिस्तान के दावों का खंडन किया।

कश्मीर मुद्दे के समाधान के लिए भारत, पाकिस्तान के साथ मिलकर काम करेंगे: ट्रंप

वॉशिंगटन । अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दोनों देशों के नेताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इसे एक बुद्धिमानी भरा निर्णय बताया, 'ताकि मौजूदा आक्रामकता को रोका जा सके, जिसके कारण बहुत से लोगों की मृत्यु और विनाश हो सकता था।'

डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा यह घोषणा करने के एक दिन बाद कि उनके देश ने भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम समझौता कराया है, अमेरिकी राष्ट्रपति ने रविवार को कहा कि वह ₹हजार साल₹ के बाद कश्मीर मुद्दे पर समाधान तक पहुंचने के लिए दोनों देशों के साथ काम करने के लिए उत्सुक हैं। अपने ट्रुथ सोशल प्लेटफॉर्म पर ट्रंप ने कहा, मैं आप दोनों के साथ मिलकर यह देखूंगा कि ₹हजार साल₹ के बाद कश्मीर के मुद्दे पर कोई समाधान निकल सकता है या नहीं। भगवान भारत और पाकिस्तान के नेतृत्व को उनके अच्छे काम के लिए आशीर्वाद दें!!!

ट्रम्प ने दोनों देशों के नेताओं के प्रति आभार व्यक्त किया तथा इसे एक बुद्धिमानी भरा निर्णय बताया, ₹वर्तमान आक्रामकता को रोकना, जिसके कारण बहुत से लोगों की मृत्यु और विनाश हो सकता था।

कुछ टिप्पणियां पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ द्वारा राष्ट्रीय कमान प्राधिकरण की बैठक बुलाने की पृष्ठभूमि में आई हैं, जो परमाणु मामलों सहित राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों पर देश की शीर्ष निर्णय लेने वाली संस्था है।

हालांकि पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने इस बात से इनकार किया कि ऐसी कोई बैठक हुई थी , लेकिन सीएनएन की एक रिपोर्ट में कहा गया कि अमेरिकी अधिकारियों ने ₹नाटकीय वृद्धि₹ के विश्वसनीय इनपुट प्राप्त करने के बाद हस्तक्षेप किया और भारत से संपर्क किया ।

यह घटनाक्रम तब हुआ जब भारत ने कहा कि पाकिस्तान अपने सैनिकों को अग्रिम इलाकों में भेज रहा है। युद्ध विराम से पहले वाली रात को अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन



किया और उन्हें पाकिस्तानी पक्ष की ओर से ₹नाटकीय वृद्धि₹ की ₹खतरनाक खुफिया जानकारी₹ मिलने की जानकारी दी, सीएनएन ने अमेरिकी सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि वेंस ने प्रधानमंत्री मोदी से संपर्क करने से पहले ट्रंप को इसकी जानकारी दी थी। ट्रम्प ने कहा, मुझे भारत और पाकिस्तान के मजबूत और अडिग शक्तिशाली नेतृत्व पर बहुत गर्व है, जिनके पास यह जानने और समझने की शक्ति, बुद्धि और धैर्य है कि वर्तमान आक्रमण को रोकने का समय आ गया है, जो बहुत से लोगों की मृत्यु और विनाश का कारण बन सकता है। ट्रम्प ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि उनके देश द्वारा किया गया शांति समझौता भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए समृद्धि लेकर आएगा। उन्होंने कहा, आपकी विरासत आपके साहसिक कार्यों से और भी बढ़ गई है। मुझे गर्व है कि अमेरिका आपको इस ऐतिहासिक और वीरतापूर्ण निर्णय तक पहुंचने में मदद करने में सक्षम था। हालांकि इस पर चर्चा भी नहीं हुई है, लेकिन मैं इन दोनों महान राष्ट्रों के साथ व्यापार में पर्याप्त वृद्धि करने जा रहा हूं।

बीते शनिवार को ट्रम्प ने एक आश्चर्यजनक घोषणा में कहा कि उनके प्रशासन के हस्तक्षेप के बाद दोनों देश पूर्ण और तत्काल युद्धविराम₹ पर सहमत हो गए हैं, जिससे दोनों परमाणु-सशस्त्र राष्ट्रों के बीच चार दिनों से चल रहा तनाव समाप्त हो गया। ट्रम्प की घोषणा के तुरंत बाद, भारत ने कहा कि पाकिस्तानी सैन्य अभियान महानिदेशक ने अपने भारतीय समकक्ष को अपराह्न 3:30 बजे फोन किया था और शाम 5 बजे से युद्धविराम पर सहमति व्यक्त की थी।

हालांकि, यह नाजुक शांति कुछ ही घंटों तक चली और फिर भारत ने पाकिस्तान को युद्ध विराम का उल्लंघन करने के लिए दोषी ठहराया। पाकिस्तान की ओर से भारी गोलाबारी की गई और अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अखनूर, राजौरी और आरएस पुरा सेक्टरों से कई ड्रोन देखे जाने की खबरें आईं। भारत ने इस क्षेत्र में चार ड्रोन गिराए। जहां शरीफ ने दोनों देशों के बीच शांति स्थापित करने के लिए अमेरिका के प्रयासों की सराहना की, वहीं भारत ने कहा कि दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम समझौता बिना किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के हुआ।



कॉमन सेंस और ग्रेट इंटेलिजेंस का उपयोग करने के लिए दोनों देशों को बधाई। इस मामले पर ध्यान देने के लिए आपका धन्यवाद!

सेना पूरी तरह तैयार, किसी भी हमले का मुंहतोड़ जवाब देंगे

नई दिल्ली। पाकिस्तान सरकार ने शनिवार को कहा कि उसने भारत से संपर्क किया और दोनों देश बातचीत कर युद्ध विराम पर सहमत हो गए। सरकार ने कई दिनों से चल रही सैन्य तनातनी और दोनों पड़ोसियों के बीच बढ़े तनाव के बाद युद्ध विराम की पुष्टि की। भारत-पाक युद्धविराम समझौते के बाद कमोडोर रघु आर नायर, विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि पाकिस्तान ने दावा किया कि उसने अपने जेएफ 17 से हमारे र400 और ब्रह्मोस मिसाइल बेस को नुकसान पहुंचाया, जो पूरी तरह से गलत है। दूसरे, उसने यह भी गलत सूचना अभियान चलाया कि सिरसा, जम्मू, पठानकोट, भटिंडा, नलिया और भुज में हमारे हवाई अड्डों को नुकसान पहुंचाया गया, और उसकी यह गलत सूचना भी पूरी तरह से गलत है।

इसके अलावा सोफिया कुरैशी ने आगे कहा कि पाकिस्तान के गलत सूचना अभियान के अनुसार, चंडीगढ़ और व्यास में हमारे गोला-बारूद डिपो को नुकसान पहुंचाया गया, जो भी पूरी तरह से गलत है। पाकिस्तान ने झूठे आरोप लगाए कि भारतीय सेना ने मस्जिदों को नुकसान पहुंचाया। मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूं कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और हमारी सेना भारत के संवैधानिक मूल्यों का एक बहुत ही सुंदर प्रतिबिंब है। कमोडोर रघु आर नायर ने कहा कि समुद्र, हवा और जमीन पर सभी सैन्य गतिविधियों को रोकने के लिए सहमति बन गई है। भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेनाओं को इस सहमति का पालन करने का निर्देश दिया गया है।



पाकिस्तान के गलत सूचना अभियान के अनुसार, चंडीगढ़ और व्यास में हमारे गोला-बारूद डिपो को नुकसान पहुंचाया गया, जो भी पूरी तरह से गलत है। पाकिस्तान ने झूठे आरोप लगाए कि भारतीय सेना ने मस्जिदों को नुकसान पहुंचाया। मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूं कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और हमारी सेना भारत के संवैधानिक मूल्यों का एक बहुत ही सुंदर प्रतिबिंब है।
कर्नल सोफिया कुरैशी

रघु आर नायर ने कहा कि हम भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना की इस समझ का पालन करेंगे कि हम मातृभूमि की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार और सतर्क हैं और प्रतिबद्ध हैं। पाकिस्तान द्वारा किए गए हर दुस्साहस का जवाब ताकत से दिया गया है। भविष्य में हर बार जब तनाव बढ़ेगा तो निर्णायक जवाब दिया जाएगा। हम राष्ट्र की रक्षा के लिए जो भी ऑपरेशन आवश्यक हो, उसे शुरू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने कहा कि सर्वोच्च सम्मान के साथ कहें तो हमारे अभियान विशेष रूप से आतंकवादी शिविरों और भारत विरोधी गतिविधियों के लिए इस्तेमाल किए जा रहे प्रतिष्ठानों पर लक्षित हैं। भंारतीय सशस्त्र बलों द्वारा किसी भी धार्मिक स्थल को निशाना नहीं बनाया गया है।

क्या होता है सीजफायर? जिस पर राजी हुए दोनों देश

भारत और पाकिस्तान ने पूर्ण और तत्काल युद्ध विराम पर सहमति जताई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गत शनिवार को ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में घोषणा की कि अमेरिका की मध्यस्थता में लंबी रात तक चली बातचीत के बाद भारत और पाकिस्तान पूर्ण और तत्काल युद्ध विराम पर सहमत हो गए हैं। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर पोस्ट किया कि अमेरिका की मध्यस्थता में लंबी रात तक चली बातचीत के बाद, मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि भारत और पाकिस्तान पूर्ण और तत्काल युद्ध विराम पर सहमत हो गए हैं। कॉमन सेंस और ग्रेट इंटेलिजेंस का उपयोग करने के लिए दोनों देशों को बधाई। इस मामले पर ध्यान देने के लिए आपका धन्यवाद! अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम की घोषणा के साथ, यह सवाल उठ खड़ा हुआ है कि युद्ध विराम क्या है और युद्ध विराम में क्या होता है?

क्या होता है सीजफायर

युद्ध विराम विरोधी पक्षों के बीच शत्रुता या सशस्त्र संघर्ष में एक अस्थायी विराम है, जो आम तौर पर एक विशिष्ट अवधि या उद्देश्य के लिए लड़ाई को रोकने के



लिए सहमत होता है। यह एकतरफा हो सकता है, जब एक पक्ष लड़ाई बंद कर देता है, या आपसी, जब दोनों पक्ष रुकने के लिए सहमत होते हैं। युद्ध विराम का उपयोग अक्सर युद्ध, विद्रोह या सीमा पर संघर्षों में किया जाता है।

भारत-पाक युद्ध विराम का क्या मतलब है?

भारत-पाकिस्तान युद्ध विराम की स्थिति में, यह मिसाइल और ड्रोन हमलों को रोक देगा, जिसमें तुर्की द्वारा आपूर्ति किए गए अस्सिगार्ड सोंगर ड्रोन भी शामिल हैं। दोनों पक्ष अस्पतालों जैसे नागरिक बुनियादी ढांचे और अधमपुर के एस-400 सिस्टम जैसे सैन्य स्थलों को निशाना बनाना बंद करने पर सहमत होंगे। ऐसा माना जाता है कि युद्ध विराम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के हस्तक्षेप के बाद आया है, जिनके दोनों देशों के साथ अच्छे संबंध हैं।

क्रॉस बॉर्डर फायरिंग

कई बार सीज फायर जारी युद्ध के बीच घायल या बीमार लोगों को हटाने, आदान-प्रदान और परिवहन की अनुमति मिल सके इसलिए भी लागू किया जाता है। इसलिए इसे पूरी तरह से किसी संघर्ष का अंत नहीं समझा जा सकता है। हालांकि, छद्म युद्ध और क्रॉस बॉर्डर फायरिंग जैसी स्थिति में सीज फायर लंबे समय तक जारी रहने का मतलब फिर से शांति बहाली की ओर जाना भी हो सकता है।

ओवैसी ने पड़ोसी देश को दिया एक और करारा जवाब

हैदराबाद। पाकिस्तान के खिलाफ अपने सख्त रुख के लिए वाहवाही बटोर रहे एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने पड़ोसी देश को एक और करारा जवाब देते हुए कहा कि इस बार इसमें पाकिस्तान के भाई राष्ट्र तुर्की को भी शामिल किया गया है, जो उसे अटूट समर्थन दे रहा है। ओवैसी, जो पहले पाकिस्तान के खिलाफ हमलावर देखे गए थे, ने अब तुर्की पर सवाल उठाए हैं। उनका दावा है कि एक तरफ तुर्की अपनी जमीन पर आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई करता है, वहीं दूसरी तरफ पाकिस्तान का समर्थन करता है, जिसे आतंकवाद का वैश्विक केंद्र माना जाता है।

उन्होंने कहा कि हमें तुर्की को यह समझाना होगा। यह दुनिया का एकमात्र देश है जो अपनी जमीन पर आतंकवादी संगठनों, कुर्द समूहों पर बमबारी करता है। जब तक उन्होंने इराक के साथ समझौता नहीं किया था, तब तक वे वहां भी आतंकवादी संगठनों पर बमबारी करते थे। और अब वे सीरिया में भी ऐसे शिविरों पर बमबारी कर रहे हैं। इसलिए उनसे पूछा जाना चाहिए कि जब वे विदेशी जमीन पर आतंक-



वादियों को मार सकते हैं, तो वे भारत से कैसे सवाल कर सकते हैं।

ओवैसी ने कहा कि हमारी जमीन पर हमले हो रहे हैं, सैनिकों पर, उन्हें लोन मिला है। शासन-प्रशासन तो छोड़िए, उन्हें अर्थव्यवस्था चलाना भी नहीं आता। यह उनकी गलत नीति है, यहाँ हिंदू-मुसलमानों के बीच फूट डालना। मुरीदके और बहावलपुर में हमला हुआ, जो अमेरिका में आतंकवादी है, उसके पीछे पाकिस्तान की सेना खड़ी है। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान आसानी से भूल जाता है कि भारत में 230 मिलियन से ज्यादा मुसलमान रहते हैं और हमारे पूर्वजों ने दो-देश सिद्धांत को खारिज कर दिया था। हम घृणा करते हैं, हमने जिन्ना द्वारा प्रस्तावित दो-राष्ट्र सिद्धांत को खारिज कर दिया, और हमने भारत को अपना देश स्वीकार किया और यहीं रहेंगे।

एआईएमआईएम ने कहा कि पाकिस्तान भारत को धर्म के आधार पर विभाजित करना चाहता है, वह यहाँ भारतीय मुसलमानों, हिंदुओं और अन्य समुदायों के बीच और अधिक टकराव पैदा करना चाहता है। जब पाकिस्तान दो-राष्ट्र सिद्धांत की बात करता है, तो वे अफगानिस्तान की सीमा चौकियों पर बमबारी क्यों कर रहे हैं? वे ईरानी सीमा चौकियों पर बमबारी क्यों कर रहे हैं? अफगान और ईरानी मुसलमान हैं। यह पाकिस्तान का डीप स्टेट है, जो सभी अवैध गतिविधियों और आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए इस्लाम का इस्तेमाल सिर्फ.एक मुखौटा के रूप में करता है। यही वह है जो वे पिछले 75 सालों से भारत के खिलाफ कर रहे हैं।

नमाजियों ने देशभर में अमन चैन की दुआ मांगी



शामली/ झिंझाना। मुस्लिमों ने भारतीय सेना द्वारा आतंकियों को नेस्तनाबूत करने के लिए चलाए जा रहे ऑपरेशन सिंदूर को सफल बनाने के लिए जुमे की नमाज के बाद दुआएं मांगी। गत दिनों शुक्रवार को कस्बे की खारे वाली मस्जिद में जुमे की नमाज मौलाना शुहेब ने अदा कराई। नमाज के बाद मुल्क की सलामती की दुआ के साथ साथ ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी के लिए भी विशेष दुआ की गई। नमाज से पहले मौलाना ने अपने बयान में कहा कि हमारे लिए देश सर्वोपरि है। पहलगाम में दहशतगर्दों ने मासूम लोगों को बेरहमी से कत्ल करने के साथ विवाहिताओं के सामने ही उनका सुहाग छीन लिया था, जिसका बदला सेना ने आतंकी ठिकानों का नामोनिशान मिटाकर सिंदूर का बदला सिंदूर से ले लिया है। इस ऑपरेशन की सफलता पर मुसलमानों ने जुमे की नमाज के बाद भारतीय सेना को फतेह हासिल के लिए विशेष दुआ कराई गई। शामली, कांधला, कैराना में भी देश में अमन चैन की दुआ मांगी गई।

संक्षिप्त समाचार

भारतीय सभ्यता और संस्कृति एक गौरवशाली विरासत : प्रो. अंबिका

पकवा इनार, कुशीनगर। राजकीय बौद्ध संग्रहालय की तरफ से वर्मी बुद्ध विहार में पांच दिवसीय भारतीय संस्कृति अभिरुचि पाठ्यक्रम विषय पर व्याख्यान चल रहा है। इसमें प्रतिभागियों को संस्कृति, सभ्यता और समाज के बारे में जानकारी दी जा रही है। व्याख्यान के तीसरे दिन शुक्रवार को मुख्य वक्ता बुद्ध पीजी कॉलेज के इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर अंबिका तिवारी ने कहा कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति एक गौरवशाली विरासत है।

भारत न केवल एक भौगोलिक इकाई है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक चेतना है। एक ऐसा देश जहां विविधता में एकता की परंपरा जीवंत है, जहां हर पत्थर में देवत्व है और जहां हर परंपरा एक जीवन मूल्य सिखाती है। इसे नई पीढ़ी से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। भारत की संस्कृति न केवल विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, बल्कि इसकी जड़ें आज भी समाज की आत्मा में गहराई से समाई हुई हैं। इसमें 55 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। व्याख्यान का संचालन तेज प्रताप शुक्ल ने किया। कार्यक्रम के अंत में तरुण शुक्ल ने सभी अतिथियों के प्रति आभार जताया।

नाम बदलकर चलते मिले मान्यता विहीन विद्यालय

पडरौना। जिला स्तरीय गठित समिति की तरफ से शुक्रवार को दुदही क्षेत्र में संचालित गैर मान्यता प्राप्त विद्यालयों की जांच की गई। इसमें नाम बदलकर स्कूल संचालित मिले तो कई विद्यालयों का भवन पूरी तरह जर्जर मिला। बेसिक एजुकेशन ऑफिसर (बीईओ) पडरौना सुरेंद्र बहादुर सिंह व बीईओ रामकोला राजेश प्रसाद की संयुक्त टीम ने गैर मान्यता प्राप्त विद्यालयों की जांच के दौरान स्टेप बाइ स्टेप पब्लिक स्कूल गौरी श्रीराम की जांच की। जांच में मान्यता से अधिक कक्षाएं संचालित होती मिलीं। विद्यालय को केवल कक्षा एक से पांचवीं तक की मान्यता प्राप्त है, जबकि कक्षा आठवीं तक मिला। कक्षाओं का पार्टीशन एल्युमिनियम शीट से किया गया था, जो कभी भी गिरने की स्थिति में था। ग्राउंड फ्लोर पर छह तथा प्रथम तल पर तीन कमरे पाए गए, जिनमें से दो कमरों में अत्यधिक अंधेरा था। कक्षों की स्थिति जर्जर थी और शिक्षक मानक के अनुरूप तैनात नहीं थे। एक अध्यापिका ने राष्ट्रपति शब्द और राष्ट्रपति का नाम भी गलत लिखा। इसके बाद जामिया सरकारे ने-अमत ग्राम बतरौली घुरखड़वां की जांच की गई, जहां टिनशेड में विद्यालय संचालित मिला। विद्यालय की मान्यता जामिया सरकारे ने अमत के नाम से प्राप्त की थी, लेकिन बोर्ड, आईकार्ड, टाई और बेल्ट पर जेएसएन पब्लिक स्कूल अंकित कर दिया गया था, जो नियम विरुद्ध है। एमजीटीएन पब्लिक स्कूल गौरी श्रीराम के निरीक्षण में भी विद्यालय प्रबंधन की तरफ से मान्यता के नाम में हेरफेर पाया गया। विद्यालय की मान्यता मदरसा गुलशने तहीरन नेशा के नाम से है, जबकि बोर्ड पर एमजीटीएन पब्लिक स्कूल लिखा पाया गया है। विद्यालय में कुल 57 नामांकित छात्रों में से 55 उपस्थित थे, लेकिन उपलब्ध चार कमरे मानक अनुरूप नहीं पाए गए। निरीक्षण टीम ने संबंधित विद्यालय प्रबंधकों से स्पष्टीकरण तलब करते हुए जांच आख्या उच्चाधिकारियों को प्रेषित कर दी है। आगे की कार्रवाई शासन के निर्देश पर निर्भर करेगी।

▶ भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी संपन्न

भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग : प्रो.सुधांशु

वाराणसी। तिलकधारी स्नाकोत्तर महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षा विभाग के तत्वावधान में आयोजित भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का गत दिनों मंगलवार को समापन हुआ। इस दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. सुधांशु सिन्हा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा सिर्फ संस्कृति का हिस्सा नहीं है, बल्कि हमारे जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग है।

इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय अस्मिता एवं चेतना का प्रतिबिंब है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राम आसरे सिंह ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में पुनः स्थापित करने की दिशा में इस प्रकार की संगोष्ठी आवश्यक है। जसका उद्देश्य भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषित कर उसे जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना है।

मुख्य वक्ता पूर्व प्राचार्य प्रो. समर बहादुर सिंह ने कहा कि भारत का इतिहास वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, नाट्यशास्त्र, ज्योतिष, वास्तु शास्त्र, और दर्शन जैसे ज्ञान के विविध क्षेत्रों से समृद्ध रहा है।

यह परंपराएं न केवल आध्यात्मिकता की प्रतीक रही हैं, बल्कि इनके पीछे वैज्ञानिक तर्क, अनुभव और प्रयोग के आधार भी मौजूद हैं। आधुनिक काल में इन विषयों को प्रायः केवल आस्था या पौराणिक संदर्भों से जोड़कर देखा जाता है। इससे इनकी वैज्ञानिकता जनसामान्य की दृष्टि से ओझल हो गई।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, शिक्षा संकाय के डीन प्रोफेसर अजय कुमार दुबे ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा सनातन परंपरा है जो कि हमारे जीवन मूल्यों में निहित है।

प्रो. रीता सिंह ने कहा है कि भारतीय ज्ञान परंपराओं की वैज्ञानिक बुनियाद को पुनः खोज कर उसका विश्लेषण करें और शोध आधारित प्रमाणों के साथ उसे शैक्षणिक व सामाजिक पटल पर प्रस्तुत करना अत्यंत जरूरी है। संगोष्ठी में कुल लगभग 180 शोध पत्र पढ़े गए। संगोष्ठी में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध विषयों पर प्रो. श्रद्धा सिंह, डॉ. अरविंद कुमार सिंह, डॉ. प्रशांत कुमार पांडेय, डॉ. गीता सिंह, डॉ. सुलेखा ने चर्चा किया। संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. सीमांत राय ने स्वागत किया। आयोजक सचिव डॉ. वैभव सिंह ने संचालन किया।

कुछ इस तरह से नजर आया पाकिस्तान का विरोध



वाराणसी। सीमा पर एक ओर जहां सेना पाकिस्तान की नापाक करतूतों का जवाब दे रही है वहीं जमीन पर भी पाकिस्तान का प्रतिकात्मक विरोध जारी है। अस्सी घाट पर सड़क के बीच में पाकिस्तान का झंडा बनाया गया। इसका उद्देश्य पाकिस्तान को पैरों तले रौंदने का है। कहा जा रहा है कि जब जनता के पैरों पर पाकिस्तान होगा तो उन्हें शांति मिलेगी। बता दें कि आज पूरा देश सेना के हौसले का सम्मान कर रहा है वहीं पाकिस्तान की नापाक हरकत से गुस्सा है। पाकिस्तानी झंडे पर आक्रोश को प्रकट करने के लिए सड़क पर ये झंडा बनाया गया है। इसे बनाने वालों का कहना है कि पाकिस्तान भारत की जनता के पैरों से रौंदा जाएगा।

संत नहीं बन सकते तो संतोषी बन जाओ : प्रभाकर महाराज

बरसठी। कथा वाचक प्रभाकर महाराज ने कहा कि मनुष्य स्वयं को भगवान बनाने के बजाय प्रभु का दास बनने का प्रयास करें। भक्ति भाव देख कर जब प्रभु में वात्सल्य जागता है तो वे सब कुछ छोड़ कर अपने भक्तरूपी संतान के पास दौड़े चले आते हैं। वह खुआवा गांव में चल रही सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के समापन पर भक्तों के बीच प्रवचन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में मनुष्य तनाव में जीता है। जब कि संत सद्भाव में जीता है। श्रीकृष्ण भक्त एवं बाल सखा सुदामा के चरित्र का वर्णन, श्रीमद्भागवत तथा श्रीव्यास पूजन किया। श्रीकृष्ण एवं सुदामा की मित्रता का बड़ा ही मनोरम तरीके से वर्णन किया। कथा व्यास ने कहा कि, कहा कि ह्रास्व दामा यस्य सः सुदामाह्र अर्थात जो अपनी इंद्रियों का दमन कर ले वही सुदामा है। सुदामा की मित्रता भगवान के साथ निःस्वार्थ थी। उन्होंने कभी उनसे सुख साधन या आर्थिक लाभ प्राप्त करने की कामना नहीं की। अगले प्रसंग में शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को सात दिन तक श्रीमद्भागवत कथा सुनाई, जिससे उनके मन से मृत्यु का भय निकल गया। तक्षक नाग आता है और राजा परीक्षित को डस लेता है। राजा परीक्षित कथा श्रवण करने के कारण भगवान के परमधाम को पहुंच गए।

महाराणा प्रताप ने कभी थकान व हार नहीं किया स्वीकार : जयवीर

जौनपुर। शूरवीर महाराणा प्रताप की जयंती के अवसर पर गत दिनों शुक्रवार को कलेक्ट्रेट प्रेक्षागृह में राजपूत सेवा समिति द्वारा प्रशासनिक क्षेत्र में अपनी मेधा का परचम लहराने वाले मेधावियों के साथ-साथ प्रतिभाशाली राजपूत युवाओं को सम्मानित किया। मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार में पर्यटक एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने मेधावियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि राष्ट्र नायक महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा मिलती है। वे ऐसे राष्ट्र पुरुष थे जिन्होंने कभी थकान, हार स्वीकार नहीं की। उन्होंने राष्ट्र के लिए अपना सर्वत्र न्योछावर कर दिया। राष्ट्र को एक सूत्र में बांधकर आततायइयों के खिलाफ एक बेमिसाल उदाहरण प्रस्तुत करने का काम किया। पर्यटक मंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश प्रशासनिक अधिकारियों की बात करे तो जौनपुर जिले का पहले से ही इतिहास रहा है। जौनपुर हर क्षेत्र में अग्रणी है महाराष्ट्र सरकार के पूर्व गृह राज्यमंत्री कृपाशंकर सिंह ने कहा कि सबसे ज्यादा प्रशासनिक अधिकारी जौनपुर ने दिया है। आज मेधावियों को सम्मानित करके राजपूत समाज गौरवान्वित हो रहा है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हमारी भारतीय सेना ने जिस ढंग से सिंदूर का मतलब समझाया है उससे यही कहा जा सकता है कि लंका दहन हुआ है अभी रावण बाकी है। इसके पहले दीप प्रज्वलित कर अतिथियों ने कार्यक्रम की शुरूआत की। विद्यार्थियों ने महाराणा प्रताप के शौर्य पर शानदार कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों ने कलीचा बाद तिराहे पर स्थापित महाराणा प्रताप जी के मूर्ति पर माल्यार्पण किया। स्वागत करते हुए समिति के सदस्य ओम प्रकाश सिंह ने समिति के गठन और समाज में किए जा रहे अच्छे कार्यों के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर एमएलसी बृजेश सिंह, विधायक रमेश सिंह, जिलाधिकारी डॉ.दिनेश चंद्र, एसपी डॉ.कौस्तुभ, पूर्व विधायक डाक्टर हरेंद्र प्रताप सिंह, अधिवक्ता दुष्यंत सिंह आदि मौजूद रहे। अध्यक्षता कुंवर जय सिंह बाबा ने की। संचालन राजेश सिंह व आभार डाक्टर बीबी नवाब ने व्यक्त किया।

इन मेधावियों को किया गया सम्मानित :- अतिथियों ने सिविल सेवा परीक्षा में 78 वीं रैंक हासिल करने वाले डुहिया, डेमा, बदलापुर निवासी मेधावी अभिषेक सिंह, खलीलपुर निवासी मेधावी प्रशांत सिंह, भूपतिपट्टी गांव निवासी गौतम सिंह, कुदुपुर गांव निवासी शिवम सिंह, जलालपुर ग्राम निवासी साखी सिंह, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित पूर्व पुलिस अधीक्षक डा.राममोहन सिंह को शाल व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। आल्हा सम्राट फौजदार सिंह ने बीर रस में आल्हा सुनाकर सभी को रोमांचित कर दिया। महाराणा प्रताप की जयंती पर शुक्रवार को खेल राज्यमंत्री गिरीश चंद्र यादव ने कालीचाबाद तिराहे पर स्थित महाराणाप्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

उन्होंने कहा कि हम वीरता और साहस के प्रतीक महाराणा प्रताप का जीवन संघर्ष, बलिदान और धर्म की रक्षा का अद्वितीय उदाहरण है। धूमधाम से मनाई गई महाराणा प्रताप की जयंती-तेजीबाजार। क्षेत्र के राजेपुर गांव में शुक्रवार शाम को महाराणा प्रताप की जयंती धूमधाम से मनाई गई। क्षत्रिय जनहित समाज कल्याण संगठन के तत्वधान में कार्यक्रम की शुरूआत अध्यक्ष महेंद्र प्रताप सिंह ने महाराणा प्रताप के चित्र पर द्वीप प्रज्वलित कर किया। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अखंड प्रताप सिंह ने महाराणा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महाराणा का जीवन मानव भलाई और देश कल्याण के लिए हुआ था। विकासखंड के बामी गांव में सीआरपीएफ जवान संजीव सिंह के नेतृत्व में महाराणा प्रताप सिंह की जयंती मनाई गई। मुख्य अतिथि भाजपा के जिलाध्यक्ष अजय सिंह ने महाराणा प्रताप सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने लोगों से महाराणा प्रताप सिंह के व्यक्तित्व और देशभक्ति से प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम का आयोजन राजपूत संघ परिवार मछलीशहर की तरफ से किया गया।

देश की सुरक्षा में लगे जवानों के परिजनों को फक्र, दुश्मन को मुहंतोड़ जवाब दे रहे

महाराजगंज। भारत पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को देखते हुए देश की सुरक्षा में जवान डटे हैं। उनके परिजनों को फक्र है कि देश की सेवा में उनका बेटा है। परिजनों से हर रोज बातचीत होती है। जब से तनाव बढ़ा है, तब से आसपास के लोग हालचाल जानने आते हैं।

जवानों के परिजनों का कहना है कि दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब भारतीय सेना दे रही है। जिले में अलग-अलग क्षेत्र में रहने वाले सेना के जवान भारतीय सीमा की सुरक्षा में लगे हैं। जवानों के घर के लोगों से बातचीत की गई तो सभी ने एक स्वर में कहा कि देश की सेवा करना गर्व की बात है। टीवी के जरिए रोजाना की हलचल के बारे में जानकारी हो जाती है। फोन से भी कभी-कभार बातचीत होती रहती है। नौतनवा कस्बे के सिद्धार्थनगर वार्ड के रहने वाले गोरखा रेजिमेंट में लांस नायक श्याम थापा राजस्थान में तैनात हैं। इनके बड़े भाई पूरन बहादुर थापा कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे। मझले भाई अशोक थापा परिवार के साथ घर पर रहते हैं। श्याम थापा की पत्नी श्वेता थापा घर पर रहती हैं। उन्होंने बताया कि पति को समय मिलता है तो फोन करते हैं। बेटी संस्कृति थापा का हालचाल पूछने के साथ ही बात भी करते हैं। भाई अशोक थापा की पत्नी बसंती थापा बेटा अंश थापा तथा बेटी आयुषी थापा घर भी रहते हैं। अशोक थापा ने बताया कि उनके छोटे भाई श्याम थापा दो माह पहले ड्यूटी पर गए हैं। 15 दिन पहले मोबाइल पर बात हुई थी। भाभी बसंती थापा ने कहा कि पूरे परिवार को गर्व है। सेना दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब दे रही है।



उधर, नौतनवा कस्बे के महेंद्र नगर वार्ड निवासी जीवन अधिकारी अग्निवीर में आर्मी कोर में सिपाही पद पर भटिंडा पंजाब में तैनात हैं। तीन माह पूर्व घर से ड्यूटी पर गए हैं। उनकी मां नंदकला अधिकारी ने बताया कि दो दिन पहले मोबाइल से बात हुई थी। बेटा देश की सेवा में लगा है। इससे बड़ी बात क्या हो सकती है। फोन पर बात होती है तो उसका उत्साहवर्धन करती हूं। घर पर उनके पिता लोकराज अधिकारी, मां नंदकला, भाई विष्णु अधिकारी, कृष्ण अधिकारी, लालू अधिकारी, भाभी पार्वती अधिकारी आपस में चर्चा कर रहे थे। रात में पूरा परिवार एक साथ टीवी देखकर सेना की कार्रवाई के बारे में जानकारी लेता है।

पाकिस्तान सीमा पर डटा बेटा, रातभर जगा पूरा परिवार

नौतनवा। वायु सेना में तैनात जवान रातभर पाकिस्तान सीमा पर डटे हैं। वहीं नौतनवा कस्बे में उनका पूरा परिजन रात में जगकर टीवी पर अपडेट लेता रहा। नौतनवा के रतनपुर गांव के वायु सेना में तैनात जवान पाकिस्तान के दुश्मनों के छक्के छुड़ा रहा है। उनके पिता डॉ. एसके त्रिपाठी रतनपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर तैनात हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थान के सीमावर्ती वायुसेना के सैनिक ड्रोन हमले को विफल कर दिए। इसकी सूचना जैसे ही समाचार चैनल पर प्रसारित हुई तो टीवी देखकर जानकारी ली गई। बेटे का मोबाइल फोन रातभर बंद मिला। शुक्रवार सुबह सात बजे जब बेटा ड्यूटी से आया तो फोन पर अपने ठीक होने और चिंता न करने की बात कही। तब जाकर परिवार को संतोष हुआ। पिता डॉ. सत्येंद्र त्रिपाठी का कहना है कि यह मेरे व पूरे परिवार के लिए गर्व की बात है कि मेरा बेटा देश की उस समय सेवा कर रहा है जब देश को वीर जवानों की वास्तव में जरूरत है।

सैनिक के पिता परशुराम कुशवाहा का कहना है मैं खुसनसीब हूं कि मेरे दोनों बेटे सेना के जवान है और मां भारती की सेवा कर रहे है।

बेटे कर रहे देश सेवा, मां-बाप ने कहा- खुशनसीबी

तमकुहीराज, कुशीनगर। भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव से पहले बार्डर पर तैनात सैनिकों से परिजनों की आसानी से बातचीत हो जाती थी लेकिन तनाव के बाद उनके फोन का इंतजार घरवालों को रह रहा है। टीवी या खबरों को देख घर वालों की धड़कनें बढ़ रही हैं और सैनिक बेटों व देश की सुरक्षा की चिंता सता रही है। बावजूद इसके मां-बाप का सीना गर्व से चौड़ा है कि बेटे देश की हिफाजत मुस्तैदी से कर रहे हैं। तमकुहीराज थाना क्षेत्र के विशुनपुरा निवासी परशुराम कुशवाहा व छठिया देवी के छह बेटा व एक बेटी हैं। इसमें से दूसरे बेटे तेजप्रताप व पांचवें बेटे सेना के जवान हैं। एक एनएसजी के कमांडो है तो वहीं दूसरे एयर डिफेन्स में सैनिक के पद पर कार्यरत हैं। तेजप्रताप की वर्तमान तैनाती दिल्ली में है तो वहीं गोविंद कुशवाहा की तैनाती पंजाब के सीमावर्ती इलाके में है।

परिजनों ने बताया कि दूसरे बेटे तेजप्रताप कुशवाहा एनएसजी के कमांडो के रूप में वर्ष 2008-09 में भर्ती हुए। वर्तमान में दिल्ली में तैनात हैं। एक बेटा व बेटी पत्नी के साथ दिल्ली में ही रहते हैं। तीन दिन पूर्व तक घर से फोन जाता था तो आसानी से बातचीत हो जाती थी, लेकिन बार्डर पर तनाव के बाद घर से फोन जाने के बाद बात नहीं हो पाती है।

उन्होंने जब समय मिलता है तो फोन करते है तब परिजनों से बातचीत होती है। पांचवें बेटे गोविंद कुशवाहा एयर डिफेंस में बतौर सैनिक के रूप में वर्ष 2016 में भर्ती हुए। पांच वर्ष कश्मीर में तैनाती के बाद अभी पंजाब के सीमावर्ती इलाके में तैनात हैं। पत्नी दो बच्चों के साथ अंबाला में रहती हैं। गोविंद से परिजनों की बात तनाव से पूर्व 24 घंटे में तीन से चार बार होती थी। अब सीमा पर तनाव के बाद जब उन्हें फुरसत मिल रहा है तो ही फोन कर रहे हैं। बृहस्पतिवार शाम गोविंद का अपने छोटे भाई कुंदन से बातचीत हुई तो उन्होंने ने सीमा पर तनाव की बात बताई। शुक्रवार सुबह फिर परिजनों से बात हुई तो गोविंद ने बताया कि रात करीब आठ बजे से तीन बजे तक गोलीबारी होती रही।



सैनिक के पिता परशुराम कुशवाहा का कहना है मैं खुसनसीब हूं कि मेरे दोनों बेटे सेना के जवान है और मां भारती की सेवा कर रहे है। मां छठिया देवी कहती है तनाव की जानकारी के बाद रात में नींद नहीं आ रही है। दोनों बेटों की चिंता सता रही है अब आसानी से फोन से बात भी नहीं हो पा रही है। बावजूद इसके हमें अपने बेटों पर फक्र है कि देश की रक्षा के लिए बार्डर पर मुस्तैद हैं।

मैं बहादुर बेटों की मां हूं, देश के लिए सबकुछ कुर्बान करने की हिम्मत रखती हूं

मेरा सौभाग्य है कि मेरे दो बेटे मुल्क की हिफाजत के में लगे हैं। मुझे नाज है। अगर जरूरत पड़ी तो मैं अपने दोनों शिक्षक बेटों को भी देश सेवा के लिए समर्पित कर दूंगा।

महराजगंज। मैं बहादुर बेटों की मां हूं, देश के सबकुछ कुर्बान करने की हिम्मत रखती हूं। बेटा देश की सेवा में है। जब से सुना है कि पाकिस्तान से भारत का तनाव बढ़ा है, तब से थोड़ी चिंता होती है, लेकिन अपने बहादुर बेटों पर फक्र है। वे दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देंगे। यह कहना है बशीरुन निशा का। यह सिसवा नगर पालिका के असमनछपरा मोहल्ले की रहने वाली हैं। इनके दो बेटे सेना में कार्यरत हैं। इन दिनों आसपास के लोग इस परिवार का हालचाल जानने आते हैं। बदरून निशा ने बताया कि मां हूं, फिर भी अपने बेटों पर गर्व है की वे भारत मां के सेवा में लगे हैं। जब बेटों का फोन आता है तो वो अपने पिता से कहते हैं, अम्मा को टीवी पर समाचार सुनने मत दिया करें, वह बीपी की मरीज हैं। मैं बहादुर बेटों की मां हूं, मुझे क्या डर है। सबसे बड़े बेटे अकरम अली भारतीय सेना के इंजीनियरिंग कोर दिल्ली में हैं। ये 2002 में सेना में भर्ती हुए थे। यह 15 दिन पहले छुट्टी बीता कर गए हैं। दूसरे बेटे अमजद अली गार्ड्स कोर सिक्किम में कार्यरत है। इनकी नियुक्ति 2003 में भारतीय सेना में हुई थी। दो माह पहले छुट्टी पर घर आये थे। दो छोटे बेटे अशरफ अली और अख्तर अली शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। पिता अली हुसैन का कहना है की रोजाना बड़े बेटे से बातचीत होती है, दूसरा बेटा पहाड़ी क्षेत्र में है तो वहां नेटवर्क की समस्या होती है, पर दो तीन दिन में उनसे भी बात हो जाती है। मेरा सौभाग्य है कि मेरे दो बेटे मुल्क की हिफाजत के में लगे हैं। मुझे नाज है। अगर जरूरत पड़ी तो मैं अपने दोनों शिक्षक बेटों को भी देश सेवा के लिए समर्पित कर दूंगा।

छह दिवसीय स्थापत्य वास्तु कथा ज्ञान यज्ञ

भवन निर्माण में दिशाओं एवं कोणों का महत्वपूर्ण योगदान : आचार्य सुशील

रुधौली, बस्ती। चीनी मिल के बजाज देवालय में छह दिवसीय स्थापत्य वास्तु कथा ज्ञान यज्ञ के दूसरे दिन उत्तराखंड से आए आचार्य सुशील बलूनी ने दिशा ज्ञान, भूमि के प्रकार, अवस्था व ऊर्जा स्तरों की विस्तार से चर्चा की। कहा कि जीवन में गति से अधिक महत्वपूर्ण सही दिशा है। आचार्य ने कहा कि भवन निर्माण में दिशाओं एवं कोणों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। पद विन्यास, ब्रह्म स्थान व कोण तथा दिशा के हिसाब से किया गया निर्माण उत्तम भाग्य लेकर आता है। आपका भवन आपकी स्थान कुंडली है। यदि भवन वास्तु के अनुरूप बना हो तो जन्म कुंडली के दोषों का हरण करने वाला होता है। आचार्य ने बताया भूमि की दूषित अवस्थाओं जैसे कि सुप्त-मृत अवस्था अथवा अर्ध जागृत अवस्था में किया गया निर्माण कष्टकारी होता है। भवन का निर्माण अच्छे मुहूर्त में सदैव दक्षिणावर्त करना चाहिए।

हास्य-व्यंग्य की बही बयार... पाकिस्तान को भी कविता की ललकार

बस्ती। रुधौली थाना क्षेत्र के मुनियांव गांव स्थित इंद्रप्रस्थ भवन शुक्रवार की शाम कविताओं से गूंज उठा। देश के जाने-माने कवियों ने अपनी रचनाओं का वशीभूत बना लिया। हास्य-व्यंग्य की बयार देर रात तक बही। बीच-बीच में कविता के जरिये दुश्मन देश पाकिस्तान को भी ललकार मिलती रही।

कवियत्री अर्चना द्विवेदी ने मां सरस्वती की वंदना प्रस्तुत कर लोगों को भाव विह्वल कर दिया। इसके बाद कविता की बौछार देर तक हुई। अखिलेश द्विवेदी जी ने हास्य-व्यंग्य की कविता सुनाकर लोगों को खूब गुदगुदाया। अध्यक्षता कर रहे पं. अशोक टाटबरी ने कविता को ऊंचाई दी। उन्होंने नव्य भवन के उद्घाटन पर कवि सम्मेलन न्यारा है.. इंद्रप्रस्थ में आज बह रही सरस्वती की धारा है... सुनाकर लोगों का दिल जीत लिया। उन्होंने राम मंदिर पर कविता सुनाकर भीड़ को उत्साहित कर दिया। कवि विकास बौखल ने अपने चुटीले अंदाज में लोगों को खूब हंसाया। कवयित्री प्रीति पांडेय की रचना भी खूब सराही। ओज के कवि अजय ने वीर रस की कविता सुनाकर लोगों को राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कर दिया। गीतकार सौरभ त्रिपाठी ने अद्भुत गीत सुनाया। उनकी रचना माथे पर चंदन के जैसे हरदम जिसे सजाता हूं, स्मृतियों के शिलालेख पर श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूं.. सुनाकर लोगों को पहलगाम की भावुक करने वाली घटना की याद ताजा कर दी। उनकी गीत हाथ की लकीर देख अपनी तकदीर देख लेता हूं, जब कभी हारता हूं अपनों से तेरी तस्वीर देख लेता हूं इसी क्रम में कवि वेद प्रकाश द्विवेदी प्रचंड, लवलेश यादव, कृपा संगम, पवन प्रजान, शैलेंद्र पांडेय मासूम आदि ने कविता पढ़ी। संचालन कवि नीरज पांडेय ने किया। संयोजक पुरुषोत्तम पांडेय, दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री महेश शुक्ल, पूर्व कुलपति डॉ राकेश पाण्डेय ने कवियों का माल्यार्पण और अंगवस्त्र देकर स्वागत किया।



भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादियों के 9 ठिकानों को नष्ट किया, जिसमें लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे प्रमुख आतंकवादी संगठनों के हेडक्वार्टर भी शामिल थे। भारतीय सेना ने 100 किलोमीटर तक पाकिस्तान की सीमा में घुसकर आतंकवादी अड्डों पर सटीक एयरस्ट्राइक की। साथ ही, भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान के एफ-16 विमान को मार गिराया। इस ऑपरेशन ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत अपनी सुरक्षा और आतंकवाद के खिलाफ किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।



ऑपरेशन सिंदूर: आतंकवाद के खिलाफ भारत की निर्णायक कार्रवाई

रामंभारत ने हाल ही में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकवादियों के खिलाफ एक ऐतिहासिक सैन्य ऑपरेशन ₹ऑपरेशन सिंदूर₹ को अंजाम दिया, जो केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि भारतीय सेना की ताकत, साहस और आत्म-निर्भरता का प्रतीक है। यह ऑपरेशन आतंकवाद के खिलाफ एक बड़े कदम के रूप में सामने आया और पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि जब बात अपनी सुरक्षा और सम्मान की होती है, तो भारत कभी भी पीछे नहीं हटेगा। ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके के अंदर आतंकवादियों के 9 ठिकानों को तबाह कर दिया। इन ठिकानों में लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे प्रमुख आतंकवादी संगठनों के हेडक्वार्टर शामिल थे। इस सैन्य कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम देते हुए भारतीय सेना ने पाकिस्तान और आतंकवादियों को स्पष्ट संदेश दिया कि भारत अपनी सुरक्षा को लेकर किसी भी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं है।

ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य और योजना

भारत के लिए आतंकवाद केवल एक सैन्य चुनौती नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय संकट बन चुका है। पाकिस्तान की ओर से निरंतर आतंकवादी हमलों और सीमा पार आतंकवाद के कारण भारत के नागरिकों और सैनिकों की जानों का नुकसान हो रहा था। इन हमलों में न सिर्फ भारतीय सेना के जवानों की शहादत हो रही थी, बल्कि निर्दोष नागरिकों की भी जानें जा रही थीं। भारत ने हमेशा आतंकवाद के खिलाफ कूटनीतिक और सैन्य तरीके से कदम उठाए हैं, लेकिन अब यह स्पष्ट हो चुका था कि आतंकवाद के ठिकानों को नष्ट करने के लिए एक निर्णायक सैन्य कार्रवाई की आवश्यकता है।

ऑपरेशन सिंदूर की योजना को गुप्त रखते हुए भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादी अड्डों पर हमले की रणनीति बनाई। इसके तहत भारतीय वायुसेना द्वारा भारी एयरस्ट्राइक की योजना बनाई गई, जिसमें 100 किलोमीटर तक पाकिस्तान की सीमा में घुस-ाकर आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट किया गया। इस हमले में लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकवादी संगठनों के हेडक्वार्टर समेत 9 महत्वपूर्ण ठिकानों को निशाना बनाया गया। भारतीय सेना ने यह सुनिश्चित किया कि ऑपरेशन को हर पहलू से सफल और प्रभावी बनाया जाए, ताकि आतंकवादियों को कोई मौका न मिले और भारत के नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

ऑपरेशन सिंदूर की रणनीतिक सफलता

ऑपरेशन सिंदूर की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि भारतीय सेना ने बिना किसी बड़े युद्ध के पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट कर दिया। इस कार्रवाई में भारत ने यह सिद्ध कर दिया कि वह किसी भी आतंकवादी गतिविधि को बर्दाश्त नहीं करेगा और अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए हर संभव कदम उठाएगा। भारतीय वायुसेना ने अपनी एयरस्ट्राइक के माध्यम से पाकिस्तान और पीओके के भीतर आतंकवादियों के ठिकानों को निशाना बनाया। यह हमला इतनी सटीकता से किया गया कि न केवल आतंकवादियों के शरणस्थलों को नष्ट किया गया, बल्कि पाकिस्तान और आतंकवादियों को यह भी संदेश दिया गया कि भारत अपनी सुरक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार है।

इस सैन्य कार्रवाई के दौरान भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान के एक एफ-16 विमान को मार गिराया, जो भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश कर रहा था। यह घटना यह साबित करती है कि भारत अपनी वायुसीमा की सुरक्षा को लेकर अत्यधिक सतर्क है और कोई भी घुसपैठ बर्दाश्त नहीं करेगा। भारतीय सेना और एयरफोर्स की त्वरित प्रतिक्रिया ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत किसी भी चुनौती का मुकाबला करने के लिए पूरी तरह से सक्षम है।

दुनिया पर असर और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

ऑपरेशन सिंदूर ने न केवल पाकिस्तान, बल्कि पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ अपनी नीति में कोई भी समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। भारत के इस साहसिक कदम ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ एक मजबूत संदेश दिया। भारत ने यह साबित कर दिया कि वह किसी भी देश के आतंकवाद को अपने भीतर बर्दाश्त नहीं करेगा, चाहे वह देश पाकिस्तान हो या कोई और।

इस ऑपरेशन के बाद अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की सैन्य क्षमता और रणनीतिक सोच की सराहना की गई। पाकिस्तान के कई सहयोगी देशों ने भारत की सैन्य कार्रवाई को लेकर बयान दिए, लेकिन इन बयानों से यह स्पष्ट हो गया कि आतंकवाद के खिलाफ भारत की कार्रवाई को लेकर दुनिया के देशों का रुख सकारात्मक था। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भारत के इस कदम को आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई के रूप में देखा।

भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव

ऑपरेशन सिंदूर ने भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव को और बढ़ा दिया है, लेकिन भारत का यह कदम पूरी तरह से आत्म-रक्षा और आतंकवाद के खिलाफ था। पाकिस्तान हमेशा से भारत को आतंकवाद के प्रति अपनी जिम्मेदारी से बचने के लिए दबाव डालता रहा है, लेकिन भारत ने यह साबित कर दिया कि वह अपनी सुरक्षा के लिए कोई भी कदम उठाने से पीछे नहीं हटेगा। पाकिस्तान की तरफ से भारतीय कार्रवाई की आलोचना की गई, लेकिन भारत ने स्पष्ट रूप से कहा कि उसकी कार्रवाई का उद्देश्य केवल आतंकवाद को खत्म करना है और पाकिस्तान से यह उम्मीद की जाती है कि वह अपनी भूमि पर आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के लिए कदम उठाए।

भारत के इस कदम ने पाकिस्तान को यह सिखा दिया कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई सिर्फ युद्ध और सैन्य कार्यवाहियों से नहीं, बल्कि कूटनीति और आंतरिक सुरक्षा से भी लड़ी जाती है। पाकिस्तान को यह समझने की आवश्यकता है कि यदि वह आतंकवाद को बढ़ावा देता रहेगा, तो उसे इसके परिणाम भुगतने होंगे।

आतंकवाद के खिलाफ भारत का स्थायी कदम

ऑपरेशन सिंदूर एक सैन्य अभियान के रूप में तो सफल रहा ही, साथ ही यह भारत की आत्म-निर्भरता और आतंकवाद के खिलाफ उसकी नीति की भी पुष्टि है। यह कार्रवाई यह साबित करती है कि भारत ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई को और निर्णायक बना दिया है। इस ऑपरेशन से भारत ने यह भी संदेश दिया कि वह आतंकवाद को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए हर संभव कदम उठाएगा और पाकिस्तान को अपनी आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने का कोई अवसर नहीं देगा।

आगे बढ़ते हुए, यह देखना होगा कि भारत अपनी सैन्य कार्रवाई के साथ-साथ कूटनीतिक स्तर पर पाकिस्तान को आतंकवाद के खिलाफ कदम उठाने के लिए किस तरह से मजबूर करेगा। आतंकवाद का खात्मा तभी संभव है जब पूरी दुनिया इसके खिलाफ एकजुट हो और आतंकवादियों को शरण देने वाले देशों को जिम्मेदार ठहराया जाए। भारत की सेना और सरकार के संयोजन से यह उम्मीद की जाती है कि आतंकवाद के खिलाफ इस लड़ाई को पूरी दुनिया में और प्रभावी तरीके से लड़ा जाएगा।

ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं है, बल्कि यह भारत के साहस, संकल्प और आतंकवाद के खिलाफ उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रतीक है। भारत ने साबित कर दिया कि वह अपनी सुरक्षा और सम्मान के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादियों के खिलाफ यह कार्रवाई एक ठोस कदम है, जो दुनिया भर में आतंकवाद के खिलाफ संदेश देता है।

भारतीय सेना को इस अभियान की सफलता पर गर्व है और भारत की सरकार को भी बधाई, जिन्होंने इस साहसिक कदम को उठाया। ऑपरेशन सिंदूर के परिणामस्वरूप, यह सवाल उठता है कि पाकिस्तान और दुनिया के अन्य देश आतंकवाद के खिलाफ क्या कदम उठाएंगे। भारत की यह कार्रवाई केवल शुरूआत है, और उम्मीद है कि भविष्य में भारत और भी निर्णायक कदम उठाएगा ताकि आतंकवाद का पूरी तरह से खात्मा हो सके।



-प्रियंका सौरभ

सीधा वार, आर या पार।



सीने में ज्वाला, निगाहों में अंगार,
फौलाद से भी सख्त हिंद का ललकार,
अब न केवल सरहदें कांपेंगी,
दुश्मन के दिल भी थराएँगे बार-बार।
लहू में खौलता इतिहास का गुस्सा,
हर कतरे में बसा प्रतिशोध का झोंका,
यह न सिर्फ युद्ध, यह प्रतिशोध है,
यह इज्जत का संग्राम है,
यह हिंद का अभिमान है।।
अबकी बार न रुकेंगे, न झुकेंगे,
हर गद्दार का हिसाब लेंगे,
इस बार न कूटनीति, न समझौता,
सीधा वार, आर या पार।
मिसाइलों की गर्जना, टैंकों का शोर,
हर कोने में गूंजेगा हिंद का जोर,
उधमपुर से कराची तक,
लद्दाख से बलूचिस्तान तक,
सियाचिन की चोटी से कराची के तट तक,
हर बंकर, हर चौकी, हर मोर्चा,
गूंज उठा 'जय हिंद' के नारों से।
धधक उठेगी जमीन, कांप उठेगा आसमान,
हर धमाके में गूंजेगा हिंदुस्तान,
न चट्टानें रोक पाएंगी, न नदियाँ बहा पाएंगी,
हर बंकर में लहराएगा तिरंगा।
हर गोली में वंदे मातरम्,
हर सांस में भारत मां का जयकार,
मिट जाएंगे, मगर झुकेंगे नहीं,
यही है हिंद का वचन, यही है रण का इकरार।
अबकी बार इतिहास नहीं,
भविष्य का युद्ध है ये,
सिर्फ जीतेंगे, सिर्फ मिटाएंगे,
भारत की अस्मिता, हर हाल में बचाएंगे।
जय हिंद ! जय भारत !

-प्रियंका सौरभ







भारत में खेला जाने वाला कबड्डी खेल



दम है तो तो फिर कहना मोदी को बता देना

आता हमें हर शत्रु को जड़ से मिटा देना,
दम है तो तो फिर कहना–मोदी को बता देना।
कलमा पढ़कर बना मुल्क, बलमा बना मुनीर,
घर में घुसकर हुआ हलाला, चाहते है कश्मीर।
बाल न बांका कर सके, रच कितने दुष्चक्र,
हिंद के रक्षक जब बने, हरी-सुदर्शनचक्र।
शांति लगे जब दाव पर, हम भी करते युद्ध,
कृष्ण बने अब सारथी, नहीं अकेले बुद्ध।
हर बात को नजरअंदाज किया, पर हम नहीं रुकते,
हमारे संघर्ष की कहानी में, इतिहास भी हैं झुकते।
बिना डरे, बिना थके, हम अपनी राह तय करेंगे,
दुश्मनों को चेतावनी, हम फिर लाहौर फतह करेंगे।
आता हमें हर शत्रु को जड़ से मिटा देना,
दम है तो तो फिर कहना–
मोदी को बता देना।
भारत की धरती में शक्ति का
संदेश दुनिया को बता दे,
हमारे कदमों में वो शक्ति बसी है,
जो हर किले को गिरा दे।



- डॉ सत्यवान सौरभ

चेतक प्रतियोगिता का आयोजन

बक्सर की घोड़ी बिजली रानी सबसे तेज दौड़ी

कोपागंज, मऊ । कोपागंज विकास खंड के इंदारा में शुक्रवार को महाराणा प्रताप चेतक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बिहार बक्सर के अजय सिंह के घोडी बिजली रानी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया। गत शुक्र-वार की शाम आयोजित चेतक प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिलापंचायत अध्यक्ष मनोज राय व घोसी सपा विधायक सुधाकर सिंह ने दीप प्रज्वलित कर, घुड़सवारों को झंडी दिखाई।प्रतियोगिता में बलिया,आजमगढ़, गाजीपुर,बिहार,गोरखपुर के जनपदों के 50 घुड़सवारों ने अपने घोड़ों के साथ भाग लिया जिसमें छाकडी,दो दाँत,नाकंद,पट्टा घोड़ो का दौड़ हुआ। इस प्रतियोगिता को देखने के लिए हजारों की भीड़ मौजूद रही। कुल तीन चक्र की प्रतियोगिता चली। जिसमे अजय सिंह बिहार बक्सर को प्रथम, रणजीत सिंह बलिया का द्वितीय, राजेश यादव का तृतीय स्थान घोषित किया। प्रथम को एलईडी टीवी, द्वितीय को कूलर,तृतीय को साइकिल से पुरस्कृत किया गया।



विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा ट्राफी के साथ आकर्षक उपहार भी दिए गए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलापंचायत अध्यक्ष मनोज राय व सपा विधायक सुधाकर सिंह ने कहा कि यहां आकर मुझे बहुत ही गर्व महसूस हो रहा है। इस तरह के प्रतियोगिताओं के आयोजन से अपनापन का एहसास होता है। साथ ही अपनी संस्कृति और सभ्यता को करीब से जानने का मौका मिलता है।

खतरे में जिंदगी: लोगों की नसों में घुला आर्सेनिक, चर्मरोग और सांसों पर भी संकट

बलिया। बलिया के बेलहरी ब्लॉक के गांव गंगापुर के तिवारी टोला के भृगु नाथ पांडेय (52) के शरीर पर काले चकत्ते पड़ गए हैं। पाचन संबंधी समस्याओं से परेशान हैं। सुरेश शाह (40) का परिवार भी चर्म रोग से जूझ रहा है।

गांव के रघुनाथ पांडेय कहते हैं कि 2016 में उनके छोटे भाई पप्पू पांडेय की मौत दूषित पानी पीने से हो चुकी है। इसी तरह मां ज्ञानती देवी की भी मौत हो गई थी। भूषण पांडेय कहते हैं, छोटे भाई कपिल मुनि पांडेय के शरीर पर काले चकत्ते पड़ गए थे। सांस की बीमारी हो गई थी। लगातार इलाज के बावजूद कपिल को नहीं बचा पाए। तिवारी टोला के करीब 50 घरों के 300 लोग आर्सेनिक युक्त पानी पीने के लिए विवश हैं। ये हालात सिर्फ एक गांव के नहीं हैं, बल्कि जिले के 315 गांवों के भी हैं। यहां की करीब ढाई लाख की आबादी की नसों में आर्सेनिक घुल चुका है, जो धीरे-धीरे उनके शरीर को खोखला कर रहा है।

गांव के सुदामा पांडेय ने बताया कि लाल ततवा का पूरा कुनबा दूषित पानी के सेवन से खत्म हो चुका है। गांव के कपिल मुनि पांडेय, विष्णु गोंड, भारत पांडेय, शांति देवी, नीलम पांडेय, त्रिलोकी पांडेय, पप्पू पांडेय समेत 10 लोगों की मौत का कारण भी आर्सेनिक युक्त पानी पीने से होने वाले दुष्प्रभाव थे। ग्रामीणों का कहना है कि लड़के और लड़कियों की शादी में दिक्कत आती है। लोग उनके गांव में अपने बेटे- बेटियों की शादी नहीं करना चाहते हैं।

आर्सेनिक के संपर्क में आने पर पत्थर भी लाल पड़ जाता है

जिले की 940 ग्राम पंचायतों में से 315 के भूजल में आर्सेनिक अधिक मात्रा में है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, आर्सेनिक युक्त पानी के सेवन से फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है। मानव शरीर को छोड़िए, पत्थर भी लाल पड़ जाता है। आर्सेनिक की वजह से जिले में 60 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। हजारों लोग आर्सेनिकोसिस नामक बीमारी से पीड़ित हैं। सोहांव, दुबहर, बेलहरी, बैरिया एवं रेवती विकास खंड के 55 गांवों में यह खतरनाक स्तर पर है। जाधवपुर विश्वविद्यालय की टीम ने अपनी जांच में यहां के जल में निर्धारित मानक से 140 गुना अधिक आर्सेनिक की पुष्टि की थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के तय मानक के अनुसार, आर्सेनिक की प्रति लीटर मात्रा 0.01 मिग्रा होनी चाहिए। मगर भारत सरकार ने 0.05 मिग्रा तय कर रखी है।

अफसरों की लापरवाही, परियोजनाओं पर पड़ रही भारी

आर्सेनिक प्रभावित गांवों में शुद्ध पानी उपलब्ध कराने के लिए ओवरहेड टैंक, आर्सेनिक रिमूवल प्लांट व फिल्टर लगाए गए थे। लेकिन कुछ दिनों बाद देखरेख के अभाव में खराब हो गए। इसके बाद हैदराबाद की टीम ने बेलहरी ब्लॉक के पचरूखियां-रामगढ़ के मध्य गंगा नदी में प्लांट बनाने के लिए जगह चिह्नित की। लेकिन 700 करोड़ की यह परियोजना परवान नहीं चढ़ पाई। वर्ष 2017-18 में नीर निर्मल योजना के तहत 37 परियोजनाएं स्वीकृत हुईं। विश्व बैंक से धनराशि भी प्राप्त हो गई।

31 मार्च 2020 तक परियोजना को पूरा करना था। मगर 18 परियोजनाओं में समय से काम शुरू नहीं हो पाया। वर्ष 2019 में विश्व बैंक के निर्देश पर जल निगम को धन सरेंडर करना पड़ा। वर्तमान में 3019.32 करोड़ से तीन सतही पेयजल परियोजनाओं पर काम चल रहा है। हनुमानगंज व मनियर सतही पेयजल परियोजना के इंटेक वेल के लिए जमीन का इंतजाम नहीं हो सका है।

सतही जल परियोजना के तहत तीन एजेंसियों को अलग-अलग कार्य आवंटित हैं। बेलहरी ब्लॉक में आगामी सितंबर माह से सतही जल परियोजना का संचालन आरंभ हो जाएगा। इसका 80 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है। इसके बाद लोगों को आर्सेनिक युक्त पानी से मुक्ति मिल जाएगी। -

मुकीम अहमद,
अधिशासी अभियंता,
जल निगम ग्रामीण, बलिया।

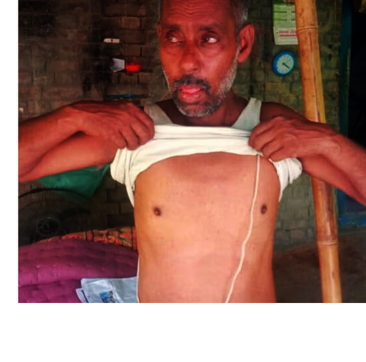
आर्सेनिक से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए कोई विशेष दवा नहीं है। चर्म रोग से ग्रसित लोगों के इलाज के लिए जिला अस्पताल में विशेषज्ञ डॉक्टर की तैनाती है। आर्सेनिक से बचाव के लिए पानी को उबाल कर पीना चाहिए।

- डॉ. संजीव वर्मन,
सीएमओ।

मीठा जहर है आर्सेनिक, शरीर को कर देता है खोखला

सीएमओ डॉ. संजीव वर्मन ने बताया कि आर्सेनिक युक्त पानी का सेवन करने वालों को चर्म रोग हो जाता है। लगातार सेवन से लोग कैंसर जैसी बीमारी की चपेट में आ जाते हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, आर्सेनिक को मीठा जहर कहा जाता है। यह शरीर को धीरे-धीरे खोखला कर देता है। लोगों को सांस संबंधी समस्या भी हो जाती है। इलाज के अभाव में लोगों की जान तक चली जाती है।





सरहद के साए में भारत के भीतर की लड़ाई: जब पानी भी हथियार बन जाए: भारत की एकता पर डाका

भारत आज बाहरी हमलों से ज्यादा आंतरिक विघटन से जूझ रहा है। पंजाब-हरियाणा जल विवाद हो या पहलगाम आतंकी हमला—हर संकट के पीछे एक अदृश्य वैचारिक युद्ध छिपा है। जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और विचारधारा के नाम पर देश के भीतर एक तीसरा मोर्चा खड़ा हो गया है। यह मोर्चा न गोलियों से लड़ता है, न बम से—यह चुपचाप देश की एकता और चेतना को तोड़ता है। जब तक यह मोर्चा नहीं पहचाना जाएगा, भारत बाहरी मोर्चों पर जीत कर भी आंतरिक रूप से हारता रहेगा।

जब देश की सुरक्षा की बात होती है, तो ज्यादातर नजरें सरहद की ओर उठती हैं—वो रेखा जो हमें पाकिस्तान या चीन से अलग करती है। लेकिन भारत आज जिस सबसे खतरनाक युद्ध का सामना कर रहा है, वह न सीमा पर है, न दुश्मनों की गोलियों में। वह युद्ध भारत के भीतर चल रहा है—हमारी आत्मा, एकता और विचारधारा के खिलाफ। हाल ही में हरियाणा और पंजाब के बीच पानी को लेकर उठा विवाद महज एक प्रशासनिक समस्या नहीं, बल्कि भारत के संघीय ढांचे की अस्थिरता और क्षेत्रीय असंतुलन की गंभीर चेतावनी है। जब नंगल बांध का जलस्तर बढ़ा, हरियाणा में बाढ़ की स्थिति बनी, और पंजाब ने इसका जिम्मा लेने से इनकार कर दिया, तब यह सिर्फ एक राज्य का दुसरे से विरोध नहीं था। यह उस एकता का टूटना था, जिसकी नींव पर भारत खड़ा है। वहीं दूसरी ओर, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में एक हिंदू पर्यटक की आतंकी हत्या ने यह स्पष्ट कर दिया कि कुछ ताकतें आज भी भारत को धार्मिक आधार पर बांटने का प्रयास कर रही हैं, और यह प्रयास बंदूक की गोली से ही नहीं, वैचारिक जहर से भी किया जा रहा है।

भारत के सामने अब तीन युद्धभूमियाँ हैं—सीमाओं पर सैन्य मोर्चा, वैश्विक मंच पर कूटनीतिक मोर्चा, और देश के भीतर चल रहा वैचारिक युद्ध, जिसे मैं “आधा मोर्चा” कहता हूँ। यह आधा मोर्चा अदृश्य है, लेकिन सबसे घातक है। यह हमारे विश्वविद्यालयों, मीडिया, सोशल मीडिया और कभी-कभी हमारी राजनीति में भी दिखाई देता है। यह मोर्चा देश को विचारों से विभाजित करता है, धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र के नाम पर लड़वाता है, और एक सामान्य भारतीय के मन में राष्ट्र के प्रति अविश्वास भरता है। इस मोर्चे पर लड़ने वाले बहुरूपिए हैं। ये वे लोग हैं जो भारत के टुकड़े होने की कल्पना को क्रांति कहते हैं, जो भारत माता की जय को साम्प्रदायिकता समझते हैं, और जो हर आतंकी घटना को 'प्रतिक्रिया' और 'पृष्ठभूमि' के चश्मे से देखते हैं। इनके लिए राष्ट्र कोई भावना नहीं, बल्कि आलोचना का विषय है। जब भारत की सेना शौर्य दिखाती है, तो इन्हें मानवाधिकार याद आते हैं। जब भारत वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल करता है, तो ये “गरीबी और भुखमरी” की याद दिलाते हैं। जब भारत वैश्विक मंच पर सम्मान पाता है, तो ये इसकी तुलना “तानाशाही” से करने लगते हैं।

यह विचारधारा धीरे-धीरे युवाओं को अपने जाल में लपेट रही है। विश्वविद्यालय, जो चरित्र निर्माण के केंद्र होने चाहिए, अब राष्ट्रविरोधी नारों की प्रयोगशाला बनते जा रहे हैं। एक समय था जब शिक्षा का उद्देश्य था “सा विद्या या विमुक्तये” यानी जो मुक्त करे वही विद्या है। लेकिन आज की शिक्षा युवाओं को उलझा रही है—इतिहास को विकृत कर, स्वतंत्रता सेनानियों को जातियों में बांट कर, और राष्ट्र की अवधारणा को सांस्कृतिक वर्चस्व का नाम देकर।

सोशल मीडिया ने इस आधे मोर्चे को धारदार बना दिया है। ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर एक संगठित प्रयास दिखता है, जिसमें भारत को “हिंदू राष्ट्र”, “मनुवादी शासन”, “अल्पसंख्यक विरोधी देश” जैसे टैग दिए जाते हैं। ये टैग न केवल अंतरराष्ट्रीय छवि को प्रभावित करते हैं, बल्कि एक आम भारतीय को भी भ्रमित कर देते हैं। एक आम मुसलमान डर में जीने लगता है, एक आम दलित अलग-थलग महसूस करने लगता है, और एक सामान्य हिंदू अपराधबोध में जीने लगता है। लेकिन यह वैचारिक युद्ध सिर्फ अकादमिक बहस या सोशल मीडिया पोस्ट तक सीमित नहीं है। इसके वास्तविक और खतरनाक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। पहलगाम की घटना में एक हिंदू पर्यटक को इसलिए मारा गया क्योंकि वह धर्म से “हिंदू” था। यह केवल आतंकवाद नहीं, धर्म आधारित वैचारिक नफरत का चरम रूप है। यह घटना संकेत देती है कि भारत की विविधता को एकता में बदलने की हमारी कोशिशें अभी भी अधूरी हैं, और नफरत की जड़ें बहुत गहरी हैं।

भारत के इस आधे मोर्चे पर राजनीति की भूमिका भी बेहद संदेहास्पद है। जहां सत्ता में आने के लिए नेताओं को राष्ट्रवाद का झंडा उठाना पड़ता है, वहीं वोट पाने के लिए वे समाज को बांटने वाले विमर्शों को बढ़ावा देते हैं। कभी अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, कभी दलित आरक्षण की राजनीति, कभी क्षेत्रीय अस्मिता—इन सभी ने भारत की राष्ट्रीय पहचान को कमजोर किया है। राजनीतिक लाभ के लिए देश की एकता को दांव पर लगाना आत्मघाती है, लेकिन आज यही हो रहा है। इस वैचारिक युद्ध का एक और चेहरा है—पानी, बिजली, संसाधनों और भाषाओं को लेकर क्षेत्रीय लड़ाइयाँ। क्या यह सोचने का विषय नहीं है कि एक ही देश के दो राज्य—हरियाणा और पंजाब—पानी के लिए एक-दूसरे को बाढ़ और सूखे में झोंकने लगे हैं? क्या यह भी वैचारिक युद्ध का ही हिस्सा नहीं है कि भारत के भीतर 'दूसरे राज्य से नफरत' की भावना पैदा की जाए? यही बात भाषाओं को लेकर भी है। हिंदी को थोपने के नाम पर दक्षिण में असंतोष, मराठी बनाम हिंदी, बंगाली बनाम असमिया—ये सब भारत की आत्मा के खिलाफ छेड़े गए “आधे युद्ध” के उदाहरण हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि भारत के इस आधे मोर्चे को उतनी ही गंभीरता से लिया जाए जितनी कि सीमा पर हो रहे सैन्य संघर्ष को। देश की सुरक्षा केवल टैंकों और मिसाइलों से नहीं होती, बल्कि विचारों की स्पष्टता, सामाजिक समरसता और राष्ट्र के प्रति आस्था से होती है। हमें यह समझना होगा कि “देश की आलोचना” और “देशविरोध” में फर्क है, लेकिन यह फर्क तब खत्म हो जाता है जब आलोचना का उद्देश्य सुधार नहीं, विनाश हो। भारत को इस मोर्चे पर जीतने के लिए केवल सैनिकों की नहीं, बल्कि शिक्षकों, लेखकों, पत्रकारों, कवियों, एक्टिविस्टों और आम नागरिकों की जरूरत है। हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को फिर से राष्ट्रनिर्माण की ओर मोड़ना होगा। हमें सोशल मीडिया पर राष्ट्र के पक्ष में भी एक वैचारिक मोर्चा खड़ा करना होगा। और सबसे महत्वपूर्ण, हमें राजनीति को मजबूर करना होगा कि वह देश की कीमत पर राजनीति न करे। जो लोग इस आधे मोर्चे को “स्वतंत्रता की आवाज” समझते हैं, उन्हें यह भी समझना होगा कि स्वतंत्रता की पहली शर्त है—एकता। एकता के बिना आजादी केवल एक भ्रम है। जो राष्ट्र अपने भीतर के दुश्मनों को नहीं पहचान पाता, वह बाहरी दुश्मनों से कब तक लड़ेगा? भारत की असली परीक्षा युद्ध भूमि में नहीं, विश्वविद्यालयों की कक्षाओं, मीडिया के पन्नों, सोशल मीडिया के पोस्टों और संसद की बहसों में है। यह परीक्षा इस बात की है कि क्या हम भारत को सिर्फ एक भूखंड मानते हैं या एक जीवंत चेतना। यह चेतना केवल तब जीवित रह सकती है जब हर नागरिक, हर छात्र, हर राजनेता और हर लेखक यह समझे कि भारत की विविधता उसकी शक्ति है, कमजोरी नहीं। इसलिए अब समय है इस “आधे मोर्चे” को पूरी गंभीरता से लेने का। देश को टूटने से बचाने के लिए अब टैंकों से नहीं, विचारों से लड़ना होगा। और इस लड़ाई में हर भारतवासी एक सैनिक है—या तो राष्ट्र के पक्ष में, या राष्ट्र के खिलाफ।



- डॉ. सत्यवान सौरभ,

मूल भारतीय संस्कारों से दूर होती नई पीढ़ी

एक समय की बात है कि एक बहुत ही गरीब पिताने मेहनत-मजदूरी करके अपने बेटे को पढ़ाया लिखाया और बेटे ने भी पिता की प्रेरणा से जमकर वार श्रम किया। फिर एक दिन ऐसा आया कि बेता आई एएस (भारतीय प्रशासनिक सेवा) की परीक्षा उत्तीर्ण कर विभिन्न पदों से गुजरता हुआ जिलाधिकारी बन अगा। पिता की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा। बेटे की सफलता से पिता का सीना गर्व से फूल गया। लेकिन उसने सोचा कि क्या मेरे दिए संस्कार बेटे में विद्यमान है। उसने बेटे को परीक्षा लेनी चाहिए। फिर जिस दिन बेटा जिलाधिकारी की कुर्सी पर बैठा तो गर्वित चिता वहां पहुंचा और उसने अपने बेटे के सिर पर हाथ रख कर पूछा- बेटे संसार में सबसे बड़ा पिता के सवाल के जवाब में बेटे ने कहा- मुझसे बड़ा कोई नहीं है। पिता को अपने बेटेका उत्तर सुनकर बड़ा झटका लगा। उन्हें लगा कि बेटा विभागीय तरक्की की परीक्षा में तो पास हो गया है, लेकिन लगता है कि संस्कारों की परीक्षा में सफल नजर नहीं आता। वे निराथ भाव से लौटने लगे तो बेटेने पिता से कहा, पिता जी फिर से आजा सवाल फिर से नहीं पूछेंगे। पहले को पिता को बेटे के सवाल पर आश्चर्य हुआ लेकिन उन्होंने बेटे से पूछ ही लिया कि संसार में बड़ा कौन है? तो बेटे ने उत्तर दिया। आपसे बड़ा कोई भी नहीं है। लोटते पिता ने रुक कर पूछा, कुछ देर पहले तो तुमने कहा था कि - तुमसे बड़ा और कोई नहीं है। तो अब क्या हुआ। बेटे ने शांतभाव से उत्तर दिया कि - पिताजी आपने सवाल किया था तब आपका हाथ मेरे सिर पर था। रखा हुआ था, इसीलिए मैंने कहा था कि मुझसे बड़ा कोई संसार में नहीं है। लेकिन यह एक हकीकत है कि पिताजी आपसे बड़ा कोई नहीं है। लेकिन यह एक हकीकत है कि पिताजी आपसे बड़ा कोई नहीं हो सकता, क्योंकि अपने पुत्र को संस्कार देने वाले पिता के अलावा कोई नहीं हो सकता। यह एक ऐसा प्रसंग है जिसने हृदय को गहराई तक प्रभावित किया। इसमें दो राय नहीं है कि आज की युवा पीढ़ी को संस्कारों की सच्ची दौलत देने की सख्त आवश्यकता है। इस दिशा में समाज को फिर से प्रयास करने होंगे। निर्विवाद रूप से भारतीय संस्कृति में जिन तीन पूज्य व्यक्तित्वों को शीष स्थान दिया गया है उनमें माता पिता और गुरु को रखा गया है। श्लोक भी है -

मातृदेवो भव,
पितृदेवो भव, और
आचार्य देवो भव।

निरंतर आत्मकेंद्रित होते समाज में व्यक्ति का चरमः यौनिकता वादी होना किसी भी समाज के लिए खतरे की घंटी है। जीवन मूल्यों का यह पराभाव कालांतर में हमारे रिश्ते-नातों को लीलता है। लोकोपकार की भावना तिरोहित होती है। कुलमिलाकर मानवता का हनन होता है। व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य में कालान्तर में समाज की दशा-दिशा भी प्रभावित करती है। आज समाज में आर्थिक उपलकिधयों को तो सफलता का पर्याय मान लिया जाता है लेकिन किसी को भी संस्कारों के खोने की कोई चिता नहीं है।

इसमें दो राय नहीं किसी भी समाज में माता पिता सर्वोपरि है क्योंकि माँ ही जन्म देकर इस संसार में कुछ का अस्तित्व का अवसर देती है। पिता ही हमें समाज से परिचित करवाकर जीवन की ऊंचाइयों से अवगत कराते हैं। इसके अलावा गुरु हमारे जीवन से अज्ञान मिटाकर हमें ज्ञान संपन्न बनाते हैं। तभी हम समाज में कहीं कुछ बन पाते हैं। यह आज के वक्त की विडंबना ही है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को तमाम भौतिक सुख सुविधाएं खूब देना चाहते हैं लेकिन संस्कार शून्य बनाते जा रहे हैं। विचारणीय है कि - आखिर क्यों हम आज पश्चिमी भौतिकता की आंधी में फंस कर अपनी इन संस्कारों की बेशकीमती दौलत को भूल गए है। निसंदेह आज बहुत आवश्यक हो गया है कि संतोष-धन अर्थात आत्म संतोष के उच्चतर जीवन मूल्य को फिर से स्थापित करने के गंभीर प्रयास हम करें। हमें सदैव याद रखना चाहिए कि तमाम सुख और शांति जीवन में भौतिक उपलब्धियां हासिल करके नहीं पाई जाती है बल्कि जीवन के संस्कारों से उनसे उन्हें पाया जा सकता है, जिस दिन हृदय में संतोष का भाव आ जाता है, उस दिन हमें सच्ची सुखानुभूति सहजता से ही होने लगेगी।

पहलगाम के आतंकियों को ऐसी सजा दी जाएगी जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए प्रधानमंत्री ने आश्वासन पूरा किया है। इस कार्रवाई से उन महिलाओं को यकीनन काफी हद तक सुकून मिला होगा, जिनके माथे के सिंदूर को दहशतगर्दों ने पहलगाम में मिटाया था। आतंकवादियों के सरपरस्तों को दिया गया यह अब तक का सबसे सख्त संदेश है।

आतंकवाद के सरपरस्तों को दिया गया भारतीय सेना का सख्त संदेश

मंगलवार-बुधवार की दरम्यान रात पाकिस्तान के जिन आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया गया, वह काफी उल्लेखनीय घटनाक्रम है। वह अपनी तरह का अलहदा लक्षित हमला है क्योंकि इसमें मिसाइल का प्रयोग किया गया है। इस कार्यवाही से आतंकी दावों को काफी नुकसान पहुंचाया गया है जिनका इस्तेमाल दहशतगर्दों को तैयार करने में किया जा रहा है। सीमा पार हमले का यह तरीका भी गौर करने योग्य है, क्योंकि हमारी मिसाइलें अपने लक्ष्य को लेकर इतनी सटीक थीं कि उन्होंने सिर्फ आतंकियों के अड्डे नेस्तनाबूद किए, किसी आम इंसान को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। यह तनाव का पहला स्तर है। इसमें पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों निशाना नहीं गया। और ना ही उसके अन्य प्रतिष्ठान हमारी जद में थे। हमारा मकसद स्वतंत्र था, जिसे बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में विदेश सचिव विक्रय मिसरी ने स्पष्ट किया कि-कार्यवाही -नपी-तुली, नॉन-एस्केलटरी और जिम्मेदारीपूर्ण है। यानी हम इस मामले को तूल नहीं देना चाहते हैं। मगर पाकिस्तान इसका कुछ न कुछ जबाब दे सकता है। खबर है कि स्वतंत्रतः उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा समिति ने अपने सशस्त्र बलों को भारतीय कार्रवाई के खिलाफ अपने हिसाब से जवाब देने की छूट दे दी है। पाकिस्तान की यह पुरानी फितरत है। उसकी मंशा किसी न किसी तरह से भारत से बढ़त होने की रही है। 1998 को परमाणु परीक्षण स्मरणीय है। 11 मई को हमने पांच परमाणु परीक्षण किए। जिसके जवाब में 28 मई को पाकिस्तान ने यह परीक्षण किए। वह अपने फौज या तो युद्ध करती है या युद्ध की तैयारी। पहलगाम हमले के बाद हमारी सेना और सरकार पर यह दबाव था कि वह इसका जवाब दे। शुरूआत कूटनीतिक कदमों से हुई सिंधु नदी जल समझौते को स्थगित करने जैसा महत्वपूर्ण काम हुआ। मगर उसके साथ दूसरी सैन्य तैयारियां भी की जाती रही। इसी का परिणाम है-ऑपरेशन सिंदूर।

मेजर जनरल जी.जी. द्विवेदी (रिटायर्ड) के अनुसार मैं जब सेना में अपनी सेवाएं दे रहा था, उस वक्त दोनों देशों के बीच सीमा पर संघर्ष विराम नहीं था। सरहद पर अक्सर गोलीबारी होती रहती थी। हम भी उनका मुंहतोड़ जवाब देते हैं। इंफेंट्री फायर आर्म्स या हल्की आर्टिलरी और विस्फोटकों का इस्तेमाल होता था। कोशिश यही रहती कि दुश्मन हावी रहे। स्रोत-रेखा पर फायर असॉल्ट (एक-दूसरे पर गोलीबारी) और नजदीकी टकराव बहुत आम बात मानी जाती है।

सीमा के काफी अंदर जाकर मिसाइल से आतंकी ठिकानों पर हमला करने की नई परंपरा है। यह कम-तीव्रता वाली यानी लो डेंसिटी जंग जैसी कार्रवाई है। मगर हमारे दिनों में भी 'हॉट-एलओसी' (सीमा रेखा पर तनातनी) थी। और हमें कार्रवाई करने की स्वतंत्रता मिली हुई थी। यही कारण है कि हमने उन दिनों लश्कर के कई लड़ाकों को मार दिया। गिराया था।

हमें यह भी समझना होगा कि-पाकिस्तानी फौज और पाक-प्रायोजित आतंकी लड़ाके, दोनों अन्योन्याश्रित अथवा एक सिक्के के दो पक्ष हैं। वे हमारे लिए दो अलग-अलग चेहरे हैं। लेकिन पाकिस्तान के लिए एक हैं। उसकी अगली पंक्ति में आतंकी लड़ते हैं जिनको पीछे से पाकिस्तानी फौज सह देती है। अच्छी बात है कि इस बार हमने समग्र कार्रवाई की कोशिश की। हमारा दो मकसद है। - पहला-विश्व में पाकिस्तान को अलग-थलग रखना और दूसरे उसके द्वारा पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद को जड़ से खत्म करना। दोनों ही मामलों में इस बार हमें सफलता मिली है। हमने एक तरफ जहां अधिक कूटनीतिक और रणनीतिक कदम उठाकर पाकिस्तान को विश्व मंच पर अकेला कर दिया है। तो वहीं दूसरी तरफ ऑपरेशन सिंदूर चलाकर उसके आतंकियों को समाप्त करने का सफल प्रयास भी किया है।

वास्तव में, यह सरहद और फौज की लड़ाई नहीं है बल्कि पूरे देश की जंग है। अब अगर पाकिस्तान कोई प्रतिकूल कदम उठाता है तो, निःसंदेह सामने तो हमारी फौज उसका माकूल जवाब देगी लेकिन फौज के साथ-साथ देश के आम नागरिकों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। इसे तनाव का दूसरा स्तर कहा जाता है जिसमें फौजें एक दूसरे से भिड़ती हैं, तब सिविल डिफेंस का काम आम नागरिक संभालते हैं।

लिहाजा हमारे जिम्मेदार नागरिकों को आगे आना चाहिए और अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए। फिलहाल सीमा रेखा पर तनाव बना हुआ है। काफी फायरिंग हो रही है। नजर इस बात पर है कि पाकिस्तान किस हद तक भारत के अभीष्ट हमले का जवाब देता है। हालांकि इस वक्त जो उस-।की हालत है, उसको देखते हुए बहुत आक्रामक प्रतिक्रिया का अंदेशा नहीं है। फिर भी हमें अपनी तैयारियां भरपूर रखनी होगी। हमारी तरफ से कोई चूक नहीं होनी चाहिए। अन्यथा पाकिस्तान उसका फायदा उठाने की कोशिश करेगा। यह अच्छी बात है कि आज आतंकवादियों और आतंकवाद के खिलाफ, ज्यादातर देश भारत के साथ खड़े हैं। अमेरिका, इजरायल, जापान, जैसे कई राष्ट्रों ने तो हमें खुला समर्थन दे रहे हैं। इसका कूटनीतिक ही नहीं, सैन्य कार्रवाइयों में भी फायदा मिलता है।

बहरहाल इस घटना क्रम ने एक बार फिर साफ कर दिया है कि भारत आतंकवाद के खिलाफ, शून्य सहिष्णुता की नीति पर मजबूती से अमल करने लगा है।

भारत अपनी क्षमताओं के साथ युद्ध के हर संभावित रूप के लिए तैयार

भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कडे कूटनीतिक कदमों के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ ऐलान कर दिया है कि आत्मरक्षा और सुरक्षा के मामले में किसी भी प्रकार की समझौता नीति नहीं अपनाएगा। आम तौर पर भारत की रणनीति समय समय पर बदलती रही है। लेकिन इसके मूल तत्त्व हमेशा एक जैसे रहे हैं। रक्षा, कूटनीति, आतंकवाद से निपटने और क्षेत्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित करना। अभी तक भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कूटनीतिक और अंतरराष्ट्रीय रणनीतियों का सम्मिलित रूप से प्रयोग किया गया है लेकिन अब भारत वैश्विक समुदाय पर निर्भर न रहते हुए पाकिस्तान को शासन और सैन्य व्यवस्था को कड़ा सबक देने को संकल्पित दिखाई पड़ रहा है। और इसीलिए भारत सैन्य कदम उठा सकता है। कूटनीतिक हलकों में चीन-पाकिस्तान सहयोग को लेकर गहरी चिंता भी है। हालांकि सैन्य स्तर पर चीन को लेकर स्पष्टता रही है कि भारत-चीन और पाकिस्तान का एक साथ मुकाबला किस रणनीति के साथ कर सकता है। भारत की सैन्य रणनीति में रक्षा आक्रमण दोनो पहलू शामिल हुए हैं। भारत के पास अब सशक्त सैन्य और परमाणु ताकत है। जो पाकिस्तान के खिलाफ उसकी सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत ने सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलें, एयर डिफेंस सिस्टम उच्च स्मार्ट ड्रोन का भी तेजी से विकास किया है। राफेल आधुनिकतम विमान, एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली भारत की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए आयात भी किए गए हैं। सुरक्षा परिषद में युद्ध को रोकने की पाकिस्तान की गुहार वैश्विक समुदाय की युद्ध न होने देने की अपील और ईरान की मध्यस्थता की कवायद के बीच भारत ने अपने देश में मॉकड्रिल करने का निर्णय लिया है। यह आपातकालीन संकट या संकट को स्थिति की तैयारी और प्रतिक्रिया क्षमता को परखने का एक प्रभावी तरीका है। इससे सुरक्षा योजनाओं को परखने, उनकी कमी पहचानने और उन्हें सुधारने में मदद मिलती है। इस समय भारत ने मॉकड्रिल करके, इसके माध्यम से दुनिया को साफ और स्पष्ट संदेश दे दिया कि पाकिस्तान को सबक देने के लिए पूरी तैयारी कर रहा है। जो सीमित या पूर्ण युद्ध बंद के रूप में हो जाती है। सकती है। भारत के कूटनीतिक कदम अब युद्ध को रणनीति की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। सरकार ने पाकिस्तान से सभी आयातों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। देश के सभी डाक सेवाओं को निलंबित कर दिया है। और पाकिस्तानी जहाजों को भारतीय बंदरगाहों पर आने की इजाजत पूरी तरह रोक दी गई है। पाकिस्तान के जहाजों को भारत के बंदरगाहों पर एंट्री नहीं दी जाएगी। भारत ने पाकिस्तान के साथ 1960 के सिंधु जल समझौते को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने का निर्णय लिया है। पाक विमानों के एयर स्पेस को बंद कर दिया गया है। अटारी इंटिग्रेटेड चेक पोस्ट को तत्काल प्रभाव से बंद कर पाकिस्तान से भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष आयात पर तत्काल प्रभाव से अगले आदेश तक प्रतिबंध लगाने का फैसला लिया गया है। पाकिस्तानी नागरिकों को भी सख्ती से देश से बाहर निकाला जा रहा है।

देश के पहले सीडीएस जनरल विपिन रावत करीब पांच साल पहले ही साफ कह दिया था कि भारत की तैयारी हमेशा टू एंड हाफ फ्रंट वार की रहती है। उनके ढाई मोर्चे का मतलब यह था -भारत को चीन और पाकिस्तान के साथ आंतरिक मोर्चे पर इन दोनों द्वारा उत्पन्न की गई समस्याओं का भी सामना करने के लिए मुस्तैद रहना पड़ता है। भारत की सेना दक्षिणी और उत्तरी, दोनों मोर्चों पर तैनात हैं और किसी भी खतरे से निपटने के लिए मुस्तैद हैं। हालांकि इस बात की संभावना बेहद कम है कि चीन अपने आर्थिक फायदों को दरकिनार कर पाकिस्तान के साथ पूर्ण युद्ध में भाग ले। चीन की सैन्य रणनीति और आर्थिक महत्वाकांक्षाएं इसकी इजाजत नहीं देती। दुनिया के सबसे अशांत और असुरक्षित देशों में अग्रणी शुमार किए जाने वाले पाकिस्तान के कई प्रांतों में अलगाववादी आंदोलन चल रहे हैं। देश के सबसे बड़े सूबे बलूचिस्तान के कई इलाको में घुसने का सेना का साहस नहीं और आम जनता को पाकिस्तानी पहचान स्वीकार नहीं है। एक और प्रांत खेबरपख्तुनवा में अफगान समर्थित आतंकी संगठनों और गुटों का कब्जा है जो कबीलाई तरीके से शासन व्यवस्था का संचालन कहते हैं। करते हैं। मध्यपूर्व-के मुस्लिम देशों के लिए पाकिस्तान की तुलना में भारत ज्यादा महत्वपूर्ण कारोबारी साझेदार है। ईरान और पाकिस्तान के संबंध खराब दौर में पहुंच चुके है। वहीं ईरान और भारत के संबंध बहुत मजबूत है। चीनी आक्रामकता का मुकाबला करने के लिए भारत ने एशिया प्रांत प्रशांत क्षेत्र में साझेदारी बढ़ाई है, और उसे अमेरिका का समर्थन हासिल है। यदि भारत और पाकिस्तान का युद्ध होता है और चीन या तुर्की पाक की मदद करते हैं। तो निश्चित ही अमेरिका और इस्त्रायल भारत का समर्थन करेंगे। अमेरिका और चीन की कड़ी प्रतिद्वंद्वी हैं। वहीं तुर्की और इस्त्राइल से संबंध बेहद खराब हैं। युद्ध की स्थिति में भारत का अहम दोस्त रूस भी खामोश नहीं बैठ सकता। युद्ध को लेकर

भारत और पाकिस्तान के बीच 1947-48, 1965. 1971 और 1999 में कारगिल युद्ध जैसे अब तक, चार प्रमुख युद्ध हुए है। इन युद्धों में भारत को कई प्रकार के रणनीतिक कायदे/फायदे मिले हैं। ये केवल सैन्य जीत तक सीमित नहीं रहे, बल्कि राजनीतिक, भौगोलिक, कूटनीतिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर भी भारत की स्थिति मजबूत हुई है। यदि दोनों देशों के बीच एक फिर युद्ध होता है तो आर्थिक और आंतरिक रूप से बेहाल पाकिस्तान न केवल बुरी तरह पराजित होगा। बल्कि कई टुकड़ों में भी बिखर जाएगा। यह स्थिति भारत के लिए शांति और स्थायित्व ला सकती है।

भारत की तैयारियां बहु-आयामी और रणनीतिक दृष्टिकोण पर आधारित है। भारत-परमाणु शक्ति होने के साथ-साथ सशक्त और आधुनिक सेनाः वायु सेना, जो सेना तथा साइबर और अंतरिक्ष क्षमता के साथ युद्ध के हर संभावित रूप के लिए तैयार है।



आजादी के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ कई बार समझौते और संघर्षविराम की कोशिशें की हैं, लेकिन पाकिस्तान की नीतियाँ और उसके आक्रमणों का कोई अंत नहीं आया। यह वही गलती है, जो पृथ्वीराज चौहान ने की थी। पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को एक बार पराजित किया और उसे जीवनदान दिया, जो बाद में उनके साम्राज्य के पतन का कारण बना। यह उदाहरण हमें यह सिखाता है कि शत्रु के प्रति दया और माफी की आदत दीर्घकालिक रूप से हानिकारक हो सकती है।

फिर आएगा गौरी: इतिहास के पन्नों से वर्तमान तक का सबक

इतिहास की गलती: पृथ्वीराज चौहान ने 1191 में तराइन की पहली लड़ाई में मोहम्मद गौरी को हराया और जीवनदान दिया। लेकिन 1192 में, गौरी ने फिर हमला किया और चौहान को हराकर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप का भूगोल बदल दिया। क्या हम भी आज बार-बार माफी देकर वही भूल दोहरा रहे हैं?

इतिहास अपने आप में एक जीवंत कथा है, जो समय-समय पर हमें चेतावनी देता है। इसे नजरअंदाज करने की भूल, एक सभ्यता के पतन की सबसे बड़ी वजह बनती है। पृथ्वीराज चौहान का उदाहरण इसका एक सटीक प्रमाण है। बार-बार की गई माफी और शत्रु पर दया दिखाने की भूल ने एक साम्राज्य को समाप्त कर दिया। यह केवल मध्यकालीन भारत की गाथा नहीं है, बल्कि आज के दौर में भी यह संदर्भ उतना ही प्रासंगिक है। पृथ्वीराज चौहान: एक वीर राजा की भूलइतिहासकार मानते हैं कि पृथ्वीराज चौहान, अपनी वीरता और अदम्य साहस के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने कई युद्धों में अद्वितीय पराक्रम दिखाया, लेकिन जब बात मोहम्मद गौरी की आई, तो उनकी माफी देने की प्रवृत्ति ने उन्हें भारी नुकसान पहुँचाया। 1191 में तराइन की पहली लड़ाई में चौहान ने गौरी को पराजित किया और जीवनदान देकर एक गंभीर भूल की। अगले ही वर्ष, 1192 में गौरी ने फिर हमला किया और इस बार चौहान को हराने में सफल रहा। यह वह पल था जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास को हमेशा के लिए बदल दिया। इतिहास की पुनरावृत्ति: क्या हम फिर से वही भूल कर रहे हैं?अगर हम अपने वर्तमान हालात पर नजर डालें, तो क्या हम भी उसी भूल की ओर बढ़ रहे हैं? बार-बार की माफी, नरमी और गलतियों से सबक न लेने की आदत हमें कमजोर बना रही है। चाहे वह सीमा सुरक्षा का मामला हो, या फिर आंतरिक सुरक्षा की चुनौती, हर बार की चुप्पी, समझौते और क्षमादान हमें कमजोर बना रहे हैं।

क्या पाकिस्तान के साथ भी हम वही भूल दोहरा रहे हैं?आज का भारत भी बार-बार पाकिस्तान के साथ उसी भूल का शिकार होता नजर आ रहा है। बार-बार की गई शांति वार्ताएँ, संघर्षविराम समझौते, और आतंकवाद के हर वार को क्षमा करना क्या हमें फिर से एक कमजोर राष्ट्र की छवि नहीं दे रहा?

पाकिस्तान, जो बार-बार हमारी सीमाओं पर हमला करता है, हमारे सैनिकों पर कायराना हमले करता है, और हमारे नागरिकों के खिलाफ आतंकी गतिविधियाँ प्रायोजित करता है, क्या उसे बार-बार माफ करना उचित है? क्या हमें इस बात का अहसास नहीं है कि



जैसे गौरी ने चौहान की सहिष्णुता का गलत फायदा उठाया, वैसे ही पाकिस्तान भी हमारी हर माफी और नरमी को कमजोरी समझ सकता है?

यह केवल सीमा पर गोलीबारी या आतंकी हमलों तक सीमित नहीं है, बल्कि कूटनीतिक मंचों पर भी हम बार-बार शांति और समझौते की बात करते हैं, जबकि दूसरी ओर से विश्वासघात और आक्रमण की नीति जारी रहती है। यह हमारी सहनशीलता और शांति की भावना का अपमान है, जिसे बार-बार नजरअंदाज करना एक गंभीर भूल हो सकती है। अमेरिका की छाया में खड़ा पाकिस्तानअमेरिका का रुख भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इतिहास गवाह है कि कैसे अमेरिका ने पाकिस्तान को हर मोर्चे पर समर्थन दिया, चाहे वह सैन्य सहायता हो या वित्तीय मदद। अमेरिका ने कई बार पाकिस्तान को अपने भू-राजनीतिक हितों के लिए इस्तेमाल किया, जबकि पाकिस्तान ने उस समर्थन का उपयोग भारत विरोधी गतिविधियों के लिए किया। यह हमें एक बार फिर सोचने पर मजबूर करता है झ क्या हमें बार-बार माफ करने की नीति पर पुनर्विचार नहीं करना चाहिए?

पाकिस्तान, जो आतंकवाद का सबसे बड़ा निर्यातक है, उसकी सैन्य और आर्थिक सहायता करने वाला अमेरिका, क्या भारत के रणनीतिक हितों के खिलाफ नहीं है? क्या यह समय नहीं आ गया है कि हम अपनी विदेश नीति को और अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर बनाएं, ताकि हमें किसी बाहरी शक्ति पर निर्भर न रहना पड़े?

इतिहास हमें सिखाता है कि अगर हम अपने शत्रुओं की मंशा को बार-बार नजरअंदाज करेंगे, तो हमें फिर से उसी त्रासदी का सामना करना पड़ेगा जो पृथ्वीराज चौहान ने की थी। माफी की आदत हमें वीर से विवश बना सकती है, और समझौते की कमजोरी हमारे गौरव को मिटा सकती है। समय आ गया है कि हम अपने इतिहास से सबक लें और अपनी सुरक्षा को सर्वोपरि मानें। माफी एक आदर्श हो सकती है, लेकिन जब बात राष्ट्रीय सम्मान और स्वाभिमान की हो, तब हमें पाषाण की तरह अडिग और लोहे की तरह कठोर होना पड़ेगा। यही संदेश इस कविता में छिपा है झ माफी की जगह पराक्रम, और समझौते की जगह संकल्प।

अमेरिका ने पाकिस्तान को कई बार समर्थन दिया है, जबकि पाकिस्तान ने इस समर्थन का उपयोग भारत विरोधी गतिविधियों में किया। यह एक और उदाहरण है कि कैसे बाहरी शक्ति हमारे राष्ट्रीय हितों के खिलाफ काम कर सकती है, और हमें अपनी नीति को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। भारत को अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए और शत्रु के सामने कठोर और अडिग रहना चाहिए। माफी की जगह पराक्रम और समझौते की जगह संकल्प हो, ताकि हम भविष्य में ऐसे ही संकटों से बच सकें।

-प्रियंका सौरभ



आतंक पर निशाना : जख्मों पर ऑपरेशन सिंदूर ने जो मरहम

पहलगाम आतंकी हमले से मिले जख्मों पर ऑपरेशन सिंदूर ने जो मरहम लगाया है, उसकी सराहना स्वाभाविक और आवश्यक है। पाकिस्तान और पाक अधिकत कश्मीर के नौ ठिकानों पर भारतीय सेनाओं का हमलवास्तव में दुनिया को यह पैगाम है कि भारत देहशतगदी को कतई बर्दश्त नहीं करेगा। भारत ने आधिकारिक रूप से स्पष्ट कर दिया है कि उसके निशाने पर पाकिस्तानी सेना, उसके सैन्य प्रतिष्ठान और नागरिक नहीं थे. केवल दहशतगर्दों को निशाने पर लिया गया है। भारत के पास पूरी खुफिया जानकारी थी कि निशाने पर आए अनेक ठिकानों पर आतंकी पाले जा रहे हैं। जिस तरह से कुख्यात दहशतगर्द अजहर मसूद के दस से ज्यादा परिजन मारे गए हैं, उससे भी पता चलता है कि भारत का निशाना गलत नहीं था। हां, यह कसर रह गई कि मसूद बच गया। भारत भूला नहीं है कि कंधार में भारतीय विमान व यात्रियों को छुड़ाने के लिए जिन भारत विरोधी आतंकियों को साल 1999 में भारतीय कैदसे रिहा करना पड़ा था, उनमें मसूद भी शामिल था। मसूद जैसे अनगिनत आतंकियों को पाकिस्तानी सेना अपनी गोद में छिपाए हुए है और जिन्हें खत्म किए बिना भारत में अमन-चैन मुश्किल है। अव्वल तो आपरेशन सिंदूर के पूरे भाव को समझने की जरूरत है। इस अभियान के नाम में ही देशका दर्द छिपा है । इतिहास में दर्ज है कि पहलगाम में केवल मर्दों को मारा गया था और औरतों का सिंदूर मिटाया गया था। अतः ऑपरेशन सिंदूर नाम सुचिंतित और प्रभावी है । इतना ही नहीं, सैन्य अभियान के बाद भारत की ओर से दुनिया को सूचित करने के लिए दो महिला सैन्य अधिकारियों को आगे करने की भी सराहना हो रही है। भारतीय सत्ता प्रतिष्ठान के पूरे कलेवर-तेवर से पता चलता है कि पिछले लगभग दो सप्ताह से कैसी सकारात्मक तैयारी चल रही थी। भारत ने हथियार उठाते हुए भी यही संदेश दिया है कि आतंकियों की खैर नहीं । भारत की दुश्मनी पाकिस्तान के लोगों से नहीं है, सिर्फ आतंकियों से है ।दुनिया में दूसरे भी देश हैं, जो अगर किसी से बदला लेते हैं, तो इतनी तैयारी या चिंता नहीं करते। भारत ने मिसाइलों की वर्षा करते हुए भी यह सुनिश्चत किया है कि प्रहार आतंकी ठिकानों तक सीमित रहे। लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे भारत विरोधी आतंकी संगठनों को पाकिस्तानी सेना और आईएसआई से मदद मिल रही है। यह बात पूरी दुनिया जानती है, पर ज्यादातर देशों की अनजान बने रहने की पुरानी और शर्मनाक आदत है। खासकर तुर्किये जिस तरह पाकिस्तान के पक्ष में खड़ा हुआ है, यह दरअसल वही शुतुरमुर्गी मुद्रा है, जिसकी वजह से दुनिया में दहशतगर्दी का खात्मा नहीं हो रहा है। भारतीय राजनय के लिए बड़ी चुनौती है कि वह ऐसे शुतुरमुर्गी रवैये को भी निशाने पर रखे । पाकिस्तान की पुरानी हिंसक प्रवृत्ति है, वह संघर्ष को बढ़ाना चाहता है। उसकी नीति शुरू से ही मजहबी बंटवारे की रही है। पाकिस्तान ने हमले की सूचना देते हुए जिस तरह से बार-बार मस्जिदों को निशाना बनाने की बात कही है, उसकी जितनी निंदा की जाए कम है। भारत ने आतंकी ठिकानों और उनके मदरसों को निशाना बनाया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। सांप्रदायिकता की आग सुलगाए रखने की पाकिस्तानी साजिश के झांसे में किसी को नहीं फंसना चाहिए । यह समय उन आतंकियों को निशाने पर लेने का है, जिनकी वजह से किसी मजहब पर बार-बार उंगलियां उठती हैं। भारत का संघर्ष बराई व असत्य से है और हमारे संघर्ष में कतई ढिलाई नहीं आनी चाहिए।





खुफिया सूचना व सुरक्षा में हुई चूक

पहलगाम हमले का जो भी उद्देश्य रहा हो पर इसके दो उद्देश्य स्पष्ट रहे एक- चुनौती देना और दूसरो देश के अंदर रक्तपात कराना। इससे जम्मू तथा कश्मीर में पर्यटकों की संख्या एकदम कम होगी, जिसका प्रभाव जम्मू एंड कश्मीर की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा क्योंकि इस घटना के बाद जिन 22 लाख पर्यटकों ने अपने आरक्षण कराये थे। उनमें से लगभग 92 प्रतिशत ने अपने आरक्षण रद्द करवा दिए। सारे घटनाक्रम से यह भी लगता है कि शायद आतंकवादियों ने भारत सकार के प्रधानमंत्री, ग्रहमंत्री को चुनौती दी है जो लगातार अपनी पीठ ठोंकते रहने का दावा करते हैं कि धारा 370 हटाने के बाद आतंकवाद समाप्त हो गया है जिनकी बातों पर विश्वास करके पर्यटकों की बड़ी संख्या घाटी में पहुंचने लगी है कि अब तो कश्मीर हमारा है और आतंकवाद समाप्त हो गया है।

बहरहाल, इस आतंकवादी घटना ने समूचे देश के मानस को हिलाया है और सारी दुनिया भारत को जनता के साथ अपना समर्थन व्यक्त कर रही है। भारत सरकार द्वारा आमंत्रित सर्वदलीय बैठक में भी सभी राजनैतिक दलों ने सरकार को इस राष्ट्रीय संकट के समय पूरा समर्थन दिया है और राष्ट्रीय एकजुटता सामने आई है।

घटना बाले दिन प्रधान मंत्री सउदी अरब दौरे पर थे। बीच में ही अपना कार्यक्रम समाप्त कर वापस आए। जानकार सूत्र बताते हैं कि उन्होंने उतरते ही पहली बैठक विमान तल पर ही की और दूसरी बैठक अपने निवास स्थल पर। अगर प्रधानमंत्री-मोदी हवाई अड्डे के बजाय अपनी दोनों बैठक घर पर ही कर लेते तो मात्र 10 मिनट का ही अंतर पड़ता और हवाई अड्डे पर जो दो घंटे अफरा तफरी रही हजारो यात्री अपनी जगह पर स्थिर कर दिये गये। हवाई अड्डा पुलिस अड्डा जैसा ही बन गया था जिससे आम जन, यात्री अफरा तफरी और हटो बचो की संस्कृति से बच गये होते जिनके हवाई जहाज तक नहीं पहुंच पाने की वजह से छूट गए। परन्तु प्रधान मंत्री यह खबर छपवाना महत्वपूर्ण समझते थे कि वह देश में उतरते हो काम में लग गए। लेकिन सर्वदलीय बैठक से अलग रहकर बिहार की जनसभा में दंभपूर्ण बयान दिया कि गुनहगारों को कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी। आतंकवादियों को मिट्टी में मिला देंगे। जम्मू कश्मीर के पहलगाम की बैसरन घाटी में गत 22 अप्रैल को दिन दहाड़े आतंकवादियों ने निहत्थे पर्यटकों पर गोलियां चलाई और 26 लोगों को मार दिया जिसमें दर्जन भर लोग घायल हुए। मृतकों में यूएई, नेपाल, के नागरिक भी शामिल हैं। जो घूमने के लिए आए थे। आतंकियों ने धर्म पूछ कर पर्यटकों को निशाना बनाया। किसी से नाम पूछा- किसी से धर्म पूछा, किसी से कामा पढ़ने के लिए कहा। पहलगाम, जम्मू कश्मीर के पर्यटक केन्द्रों में से-पिछले वर्ष 25 लाख पर्यटक जम्मू एंड कश्मीर में आए थे जिनमें से अकेले पहलगाम में 22 लाख पर्यटक आए थे। इस नर संहार की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुडे आतंकी संगठन टीआरएफ ने ली है।

इस घटना से भी कई सवाल खड़े होते हैं- क्या यह आतंकवादी हमला जम्मू कश्मीर के धारा 370 के समर्थक आतंकवादियों द्वारा है और पाकिस्तान के द्वारा प्रेषित और पोषित आतंकवादियों द्वारा है? जो भारत सरकार को राजनीतिक निशाना बनाना चाहता है। क्या यह हमला कतिपय वैश्विक शक्तियों के उकसावे और समर्थन से किया गया है। यह हमला उस समय शुरू हुआ जब अमेरिकी राष्ट्रपति जेडी बेंस भारत दौरे पर थे। अगर भारत का मीडिया और सरकार का खुफिया तंत्र इतना काबिल है कि पाकिस्तान के सैन्य अड्डों पर क्या हो रहा है यह जान लेता है तो फिर उसे यह क्यों नहीं पता लगा कि - पहलगाम में आतंकी हमला होने

बाला है। भारत के गृहराज्य मंत्री किरण रिजजू ने सर्वदलीय बैठक में यह माना कि - खुफिया सूचना व सुरक्षा में चूक हुई है परन्तु उन्होंने यह नहीं बताया कि इस चूक का जिम्मेदार कौन है और उसके प्रति क्या कार्रवाई होगी? हमास के द्वारा जब इसरायल पर हमला हुआ वो इसराइल ने माना कि- सुरक्षातंत्र की चूक थी और इसरायल के सैन्य मंत्री को हटना पड़ा। देश की जनता जानना चाहतों है कि इतनी बड़ी चूक के लिए जिम्मेदार कौन है गुप्तचर विभाग के द्वारा यह जानकारी दी गई थी कि - पहलगाम में आतंकी हमला हो सकता है और इसके लिए रेकी की जा रही है। इसके बावजूद भी वे कौन लोग हैं जिन्होंने इस सूचना को नजर अंदाज किया और घटना को हो जाने दिया। क्या यह उनकी उपेक्षा पूर्ण लापरवाही है या कुछ लोग आतंकवादियों से मिले हुए हैं। इसकी भी जांच होनी चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख ने यह भी कहा है कि- जब शक्ति है तो उसे जरूरत पड़ने पर दिखाई जानी चाहिए। यह उनके व्यंग्य है या सलाह यह तो बेहतर वहीं जानते होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि और अगर कोई हमारी और आंख उठा कर देखता है तो हम उसकी आंख फोड़ देंगे।

माकड्रिल : युद्ध की आशंकाओं मिलता बल

पाकिस्तान ने बार-बार भारत को छेड़ने, युद्ध और झड़प को प्रोत्साहित करने का काम किया है जिसकी वजह से 1965, 1971, में युद्ध की विभीषिका दिखी। 1971 में १० हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने भारत के सामने सरेंडर किया था उस अपमान के घूंट को वह नहीं पाया। पूर्वी पाकिस्तान उसके कर्मों से अलग हो गया और उसके सूबों में शांति का नाम नहीं है। बलूचिस्तान में पिछले दिनों जिस प्रकार से ट्रेन का अपहरण और पाकिस्तानी सैनिकों की हत्या हुई उसने दुनिया भर को यह दिखाया है कि वहां के हालात किस तरह से खराब हैं। विदेशी कर्ज और आतंकवाद को समाप्त करने के नाम पर आर्थिक सहायता लेकर उसने अपने देश को कंगाल बना दिया है जिसकी वजह से दूसरे देश के लोग आएदिन उसकी संप्रभुता का अतिक्रमण किया करते हैं। वह चाहे अफगानिस्तान जैसा उसका पड़ोसी देश हो क्यों न हो माफिर अमेरिका हो क्यों न हो। अमेरिका जहां उसे आर्थिक सहायता साजो- सामान क्यों न उपलब्ध कराता रहा है। वहीं उसके घर में घुसकर आतंक का पर्याय माना जाने वाले ओसामा बिन लादेन को मारकर समुद्र में दफनाने का काम भी किया है। पहल गाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ कूटनीतिक उपायों और प्रतिबंधों के बाद भारत ने विपक्षी दलों के साथ बैठक कर करने के बाद गृहमंत्रालय ने प्रमुख राज्यों में सुरक्षात्मक मॉक ड्रिल करने का निर्देश दिया। जारी किया है। 1971 के बद यह पहला अवसर होगा जब देश में इस प्रकार के सामन बजेंगे और नागरिकों एवं प्रमुख स्थलों के लिए सुरक्षात्मक उपाय बताए जाएंगे और आपात काल स्थितियों में असे निपटने के उपाय सुझाए जाएंगे। इससे यही लगता है कि अब कारगिल, सर्जिकल स्ट्राइक और झड़पों से आगे कुछ होने वाला है इससे पूरा देश युद्ध की संभावना में' गोते लगा रहा है। माकड्रिल में सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को भेजे गए निर्देश में 244 सूचीबद्ध सिविल डिफेंस जिलों में डिफेंस का अभ्यास और रिहर्सल करने को कहा गया है। जहां तक मॉक ड्रिल का संबंध है। यह विभिन्न अवसरों पर आग लगने से बचाव, दंगा नियंत्रित करने या भूकंप से बतान के सिलसिले में छिटपुट तरीके से होते आए हैं जिसमें स्कूल कॉलेजों और एनसीसी के छात्रों को इस प्रकार के प्रशिक्षण दिये जाते रहे हैं। लेकिन युद्ध को संभावनाओं के चलते होने वाले माकड्रिल का दायरा है। गृह मंत्रालय के निर्देश इसके लिए भेजे गए हैं। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि/क्योंकि पड़ोसी देश पाकिस्तान जिस प्रकार की आतंकी गतिविधियों को पुष्पित- पल्लवित करता रहा है। और भारत के खिलाफ उसका प्रयोग करता रहता है। रहा है, और जब भारत इस पर आपत्ति करता है तो वह परमाणु बम की धमकी देने लगता है। वह पानी और खून दोनो बहेगा की बात करने लगता है जिसके कारण इस प्रकार के माकड्रिल की जरूरत होती है क्योंकि पाकिस्तान एक अप्रत्याशित कदम उठने वाला देश है ही साथ ही वहां राजनीतिक अस्थिरता एक बड़ा कारण है। नहीं वह मनोवैज्ञानिकतौर पर भी भारत से भयभीत रहता है कि भारत एक बड़ा देश है। और वह भी परमाणु, संपन्न और संसाधनों से युक्त देश है। जहां पाकिस्तान जैसी राजनीतिक अस्थिरता कमी भी नहीं रहा है। पाकिस्तान में लोकतांत्रिक व्यवस्था भी सैनिक तानाशाही के साये में पलती है और वही सरकार में रह सकता है जिसे सेना समर्थन करती रहती है नहीं तो उसकी सरकार के भरभरा कर गिरने में देर नहीं लगती है। पाकिस्तान के लिए यह कोई नई बात नहीं है। 1971 के बाद देश के अंदर होने वाली माकड्रिल इस बात की ओर भी संकेत देती है कि-पाकिस्तान और भारत के संबंध में कितना बिगाड़ हो चुका है और उसमें कितना तनाव आ चुका है। पाकिस्तान एक परमाणु संपन्न देश होने के बावजूद जिस प्रकार से वहां से बास बार परमाणु हथियार को इस्तेमाल करने की धमकी दी जाती है। यह उनकी निराशा का सबूत है। पाकिस्तान किस प्रकार से आतंकियों को पालता रहता है इस विषय में उसके मंत्री ही कहते हैं कि-वह दूसरे देशों के लिए गंदा काम करता रहा है जिसके कारण उसकी छवि को बहुत बड़ा बट्टा लगा है।

देश के अंदर होने वाली माकड्रिल से लोगों के बीच युद्ध की आशंका दिखने लगी है। आज के युग में युद्ध किसी समस्या का हल नहीं है। अमेरिका बिना युद्ध किए ही पूरी दुनिया में अपनी टैरिफ नीति से उथल-पुथल मचाए हुए है कि सभी त्राहिमाम कर रहे हैं। भारत की नीति आक्रमणकारी और विस्तारवादी नहीं रही है लेकिन हर स्थिति के लिए देश और जनता को तैयार रहना चाहिए।



एक था पाकिस्तान: इतिहास के पन्नों में सिमटता सच

'एक था पाकिस्तान' - यह केवल तीन शब्द नहीं हैं, बल्कि यह उन अनगिनत कुर्बानियों, टूटे सपनों और संघर्षों की कहानी है, जो भारतीय सभ्यता के दिल में गहरे तक समाई हुई हैं। जब हम यह वाक्य सुनते हैं, तो न केवल एक भूगोल का जिक्र होता है, बल्कि एक पूरी जड़ें, एक परिवार, एक संस्कृति, और एक सपना जो कभी हमारे अपने हिस्से में था। यह तीन शब्द उस दर्द, उस पीड़ा और उस उम्मीद का प्रतीक हैं जो विभाजन के समय के लाखों नागरिकों के दिलों में जीवित रहे।

विभाजन की पीड़ा और वर्तमान वास्तविकता

1947 का विभाजन महज एक भूगोल का बंटवारा नहीं था। यह दिलों का बिखराव था, यह जड़ों की टूटन थी, यह एक सभ्यता के विनाश का दौर था। उस समय लाखों परिवारों ने अपने घरों को खो दिया, अपने रिश्तों को खो दिया, और अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी खो दिया। विभाजन के समय जो नफरत और हिंसा फैली, उसने कई परिवारों को कभी न खत्म होने वाली कड़वाहट दे दी। एक तरफ हिंदू और मुस्लिम एक-दूसरे के दोस्त थे, और दूसरी ओर वे अचानक दुश्मन बन गए, सिर्फ.एक रेखा, एक खींची हुई सीमा, के कारण। अभी भी, विभाजन के समय की वह दर्दनाक यादें हमारे दिलों में कहीं न कहीं बसी रहती हैं। पाकिस्तान के साथ हमारे रिश्ते कभी भी सामान्य नहीं हो पाए। लेकिन क्या हमें हमेशा के लिए इस विभाजन को अपनी सोच और जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए? क्या हम अपनी अगली पीढ़ियों को भी इसी घृणा और नफरत के जाल में फंसा कर रखें? यह विचार हमें बार-बार खुद से पूछने की जरूरत है। नफरत और भेदभाव की दीवारों को गिराना आसान नहीं होता, लेकिन क्या यह संभव नहीं है?

हमारा सपना: एकता और शांति

अगर हमें वास्तव में 'एक था पाकिस्तान' को एक साकार रूप देना है, तो हमे एकता की भावना को और भी मजबूत करना होगा। हमें यह समझना होगा कि शांति और स्थिरता की असली ताकत हमारी एकता में है, न कि हमारे भूतकाल में। हमें यह भी समझना होगा कि पाकिस्तान केवल एक भूगोल का नाम नहीं है, बल्कि यह भी उन दर्दनाक घटनाओं का गवाह है, जो कभी हमारे देश के हिस्से हुआ करती थीं। लेकिन क्या हमें अपने वर्तमान और भविष्य को उसी पुराने दर्द के आधार पर जीते रहना चाहिए? क्या हम हर कदम पर नफरत के जाल में उलझ कर अपनी असली शक्ति को खो देंगे? यदि हम चाहते हैं कि ह्यएक था पाकिस्तानह्न का सपना साकार हो, तो हमें एक ऐसा समाज बनाना होगा जहां हम न केवल अपने सैनिकों की हिफाजत करें, बल्कि अपने भीतर की नफरत को भी कम करें। हमें यह समझने की जरूरत है कि युद्ध और संघर्ष का समाधान नफरत से नहीं हो सकता। यह हमेशा शांतिपूर्ण संवाद और समझ के रास्ते से ही संभव है। क्या हम अपने दिलों में नफरत और द्वेष को जगह देने के बजाय, हर विवाद का हल एकजुटता और समझदारी से नहीं निकाल सकते?

धर्म, जाति और सांस्कृतिक पहचान के मुद्दे

हमारे समाज में विभाजन के बाद भी कई सवाल उठते हैं, जिनका जवाब हमें खोजने की जरूरत है। धर्म, जाति और भाषा के नाम पर हमारी पहचान को कैसे बचाएं? भारत एक बहु-सांस्कृतिक देश है, जहां विभिन्न जातियाँ, धर्म, और भाषाएँ एक साथ रहती हैं। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम सभी का समृद्ध इतिहास एक समान है, और विभाजन हमें केवल अलग करने का काम करता है। भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता ने हमेशा हमें अपनी शक्ति और पहचान दी है, और हमें इसे अपनी एकता की नींव के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

आंतरिक बंटवारा: हमारे अंदर का पाकिस्तान

यह अत्यंत दुखद है कि हम खुद भी आंतरिक बंटवारे का शिकार हो गए हैं। धर्म, जाति, क्षेत्र और भाषा के नाम पर जिस तरह से हमारे समाज में घृणा और भेदभाव फैल रहा है, वह हमारे सपनों को कमजोर कर रहा है। अगर हमें 'एक था पाकिस्तान' का सपना साकार करना है, तो हमें खुद के भीतर की नफरत और अंधविश्वास को खत्म करना होगा। क्या हम अभी भी धर्म, जाति और क्षेत्र के आधार पर एक दूसरे से नफरत करेंगे? क्या हम अपने समृद्ध इतिहास और संस्कृति को भूलकर केवल असहमति और घृणा की राजनीति करेंगे?

> **सिंदूर की सौगंध: 'एक था पाकिस्तान' की गूंज**
>
> एक था पाकिस्तान-ये केवल तीन शब्द नहीं, बल्कि इतिहास की एक गहरी दास्तां है। यह उस विभाजन का प्रतीक है, जिसने दिलों को तोड़ा और घरों को उजाड़ा लेकिन क्या हमें हमेशा इस नफरत के जाल में फंसे रहना चाहिए? हमें न केवल बाहरी दुश्मनों से, बल्कि अपने भीतर की नफरत से भी लड़ना होगा। तभी एक दिन हम गर्व से कह सकेंगे झ हाँ, 'एक था पाकिस्तान', और हम थे, हैं, और रहेंगे एक, अखंड, अविनाशी भारत।

सैनिकों का बलिदान और उनकी भूमिका

हमारे सैनिक हर दिन अपनी जान की बाजी लगाते हैं ताकि हमारे घरों में शांति बनी रहे। जब वे सीमा पर खड़े होते हैं, तो वे केवल एक राष्ट्र की रक्षा नहीं कर रहे होते, बल्कि उनकी बीवी, उनकी माँ, और उनके बच्चे भी उनकी सुरक्षा की कामना करते हैं। हमें यह समझना होगा कि सैनिकों का बलिदान केवल उनका नहीं, बल्कि उनके परिवारों का भी होता है। इन परिवारों का दर्द वही समझ सकता है जो खुद इसे महसूस करता है। जब एक सैनिक अपने घर से निकलता है, तो उसका परिवार जानता है कि वह शायद कभी लौटकर न आए। उनकी वीरता और कड़ी मेहनत के बिना हमारा देश सुरक्षित नहीं रह सकता। हमें उनके बलिदान को सम्मान देना होगा, क्योंकि वे हमारे असली नायक हैं।

हमारी जिम्मेदारी और दायित्व

हमें अपनी अगली पीढ़ी को यह समझाना होगा कि वे नफरत की राजनीति से ऊपर उठकर एकजुट हो। शांति, सद्भाव और एकता में शक्ति है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे बच्चे एक ऐसे समाज में पले-बढ़ें, जो प्रेम, भाईचारे और समझ के सिद्धांतों पर चलता हो। इसके लिए हमें हर स्तर पर जागरूकता फैलानी होगी। सिर्फ सरकारें नहीं, बल्कि नागरिकों को भी इस दिशा में सक्रिय कदम उठाने होंगे। हर व्यक्ति को यह समझना होगा कि वह सिर्फ अपने देश का नागरिक नहीं है, बल्कि वह पूरे समाज की जिम्मेदारी निभा रहा है।

नफरत की दीवारें तोड़ना

आखिरकार, 'एक था पाकिस्तान' का सपना तब पूरा होगा जब हम नफरत की दीवारों को गिरा पाएंगे और समझदारी, भाईचारे और सहयोग की नदियाँ बहा सकेंगे। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कोई भी सरहद हमें अलग नहीं करती। हमारी जड़ें एक हैं, हमारी संस्कृति एक है, और हमारा इतिहास भी एक है। जब हम अपने भीतर के भेदभाव और नफरत को खत्म करेंगे, तभी हम अपने देश को एकजुट कर पाएंगे। हमें यह भी समझना होगा कि पाकिस्तान एक देश नहीं, बल्कि एक भूतकाल है, जिसे हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए इतिहास के पन्नों में ही छोड़ सकते हैं।

सिंदूर की सौगंध

आखिर में, सिंदूर की सौगंध एक प्रतीक है - वह प्रतीक जो हमें यह याद दिलाता है कि हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए हर कुबार्नी देने को तैयार हैं। यह सिर्फ एक वाक्य नहीं, बल्कि एक वादा है कि हम अपने देश की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार हैं। यही हमारे सैनिकों की वीरता का असली प्रतीक है। यह हमारे दिलों में वह प्रेरणा है, जो हमें कभी भी मुश्किलें आने पर अपने देश के लिए लड़ने की ताकत देती है। इस सपने को सच करने के लिए हमें न केवल बाहरी दुश्मनों से, बल्कि अपने भीतर की नफरत से भी लड़ना होगा। तभी एक दिन हम गर्व से कह सकेंगे - हाँ, 'एक था पाकिस्तान', और हम थे, हैं, और रहेंगे - एक, अखंड, अविनाशी भारत। हमारा भारत सदियों तक एकजुट और मजबूत रहेगा, जब हम हर मुश्किल के बावजूद अपनी एकता को बनाए रखेंगे। यह हमारा कर्तव्य है, यह हमारी जिम्मेदारी है, और यह हमारे वीर सैनिकों के प्रति हमारा सम्मान है।

-प्रियंका सौरभ

नदी की बादल से गुहार हमें दूषित होने से बचा लो

प्राचीन समय में माँ नर्मदा में मछलियों को पुण्य कार्य हेतु उन्हें आहार दिया जाता था। उसके बाद कई मछलियों को सोने की नथ पहना कर वापस नर्मदा के जल में छोड़ दिया जाता था। नर्मदा नदी में कई प्रकार की मछलियां पाई जाती है। इनमे से एक टाइगर फिश महाशिर मछली का दर्जा मध्यप्रदेश को प्राप्त है।विभिन्न कारणों से इस टाइगर फिश की बहुत ही कमी नर्मदा नदी में आई है। जो कि चिंता विषय है। मछली जल को साफ रखने में अपनी अहम् भूमिका अदा करती आई है उसी सन्दर्भ में बहुत पहले गंगा नदी में डॉल्फिन मछलियाँ छोड़ी थी ताकि गंगा नदी का जल साफ हो सके ,कहते गंगा का पानी कभी खराब नहीं होता। संक्रमण काल के दौरान जल वायु निर्मल हुए प्रदूषण मुक्त हुए किंतु संक्रमण के पूर्व प्रदूषणकारी संयंत्रों की वजह से रासायनिक पानी एवं अपशिष्ट डालते आने से प्रदूषण बढ़ा था। अब प्रदूषण को बढ़ने ना देवे ताकि धरती निर्मल बनी रह सकें। हमारा मानना है कि जीव - जंतुओं को अपना काम करने दे और हम भी स्वच्छता में अपना हाथ बटाए ,ताकि शुद्ध जल शुद्ध वायु की प्राप्ति हो सकें।

वर्षा के जल को सहेजा जाए उदाहरण के तौर पर परियोजना ,तालाब ,स्टॉपडेम ,निस्तार,का ज्यादा संख्या में निर्माण होवे जिसके निर्मित होने से विषम परिस्थियों में तालाब कुँए, बावड़ी आदि में स्वतः जलस्तर बढ़ जावेगा।साथ ही खेती को सिंचाई हेतु वाटर लेवल बढ़ाने में जल की आपूर्ति को एक नया बल देगा।इनके अलावा व्यर्थ ढुलने वाले पानी पर रोक हेतु पहल की जाना चाहिए।ताकि पानी की समस्याओं का सामना न करना पड़े।जल वितरण दो दिनों और पानी पाउच, बोतलों में ,पानी की टंकियों में लोग खरीद कर पी ही रहे है।यदि पानी को नही सहेजा तो एक दिन पानी की कीमत कई गुना बढ़ जाएगी।पानी सहेजें तो ही हम नदियों के पानी को व्यर्थ समुद्र में बहने से रोककर उसका उपयोग कर पाएंगे। जल ही जीवन की परिभाषा को सही तरीके से समझ पाएंगे।- इसके लिए जल संरक्षण ,जल संकल्प के साथ पानी सहेजने के स्त्रोतों का निर्माण आवश्यक है ।सूखे की स्थिति में इन संसाधनों के निर्मित होने सहेजे जल का उपयोग सुविधाजनक होगा।इसके अलावा व्यर्थ ढुलने वाले जल पर रोक हेतु पहल की जाना चाहिए।वाटर हार्वेस्टिंग घरों की छतों पर होना चाहिए ताकि जल की समस्याओं का सामना न करना पड़े। ।यदि जल को नही सहेजा तो एक दिन जल की कीमत कई गुना बढ़ जाएगी।

नदी की गुहार

जिंदगी क्या है
एक बहती नदी
जो सुख दुःख के
किनारों से
टकरा कर चलती
चलती तो है जब
दुःखो का पहाड़
गिरा तो बादल से
रिश्तें मुँह मोड़ लेते
नदियां सूखने लगती
पत्थर हो जाते नग्न
मानों किसी ने
गरीबी को उघाड़ दिया हो।
बादल को लगाई अर्जी
मौसम में
आना जरूर
क्योंकि ये तुम्हारा
कर्तव्य जो है।
स्वागत हेतु
प्रकृति के रिश्तेदार
अभिवादन की
टकटकी लगाकर
निहारते तुम्हें
तुम बरसोगे तो ही
मै बहूँगी
और किनारों पर
बसे लोगों से
कहती जाऊंगी
बादल मेरे जीवन के
प्राण है
रिश्तें है
अर्पण है
समर्पण है
तुम्हारे बरसने से ही
लोग पूजते मुझे।
सूखने पर
बन जाती रास्ता
राहगीरों का
घाट सूने बन जाते
निर्जीव
आचमन की आस
हो जाती कोसों दूर
कोई भगीरथ ही
इस झोली को
गहरा कर
पुण्य ले सकता।
गहराने से
बेह तो नहीं सकती
स्थिर तो रह सकती
जहाँ कोई प्यासा प्राणी
कम से कम
अपनी प्यास
तो बुझा सके
नहीं तो
मेरी कई बहिनें
विलुप्त हुई
वैसे ही मैं तो
विलुप्त होने से
बच जाऊंगी
लोगों को
दर्शन और प्यास से
अपना वर्चस्व बताऊंगी।



संजय वर्मा दृष्टि'
125,बलिदानी भगत सिंह मार्ग
मनावर(धार)मप्र

किस-किस को जागरूक करें

कानून के रखवाले खुद कानून की खिल्ली हैं उड़ाते
गुनहगार को जेल में सब सुविधाएं मुहैया हैं करवाते
आम आदमी की घिस जाती है
एड़ियां न्याय पाने के लिए
गुनहगारों के लिए
रात को भी दरवाजे हैं खुल जाते
जिन पर जिम्मेवारी है भारत का भविष्य बनाने की
बच्चों के भविष्य से वही हैं खिलवाड़ कर जाते
दूसरों को नशे से दूर रहने के बारे में कैसे बताएंगे
जब वही दारू पीकर खुद विद्यालय में है आते
पढ़े लिखे समझदार नासमझी की बात हैं कर जाते
घर का कचरा उठाकर
चुपके से रास्ते में हैं फैंक आते
अपने घर तक तो आ गई
सड़क किसी की जमीन से
मेरी जमीन से आगे नहीं
जाएगी लोगो को हैं आंख दिखाते
सड़क पर गाड़ी चलाते दादागिरी हैं दिखाते
कोई पास मांगे तो लड़ने पर हैं उतर आते
यातायात के नियमों का पालन कभी करते नहीं
दूसरों को यातायात के नियम है समझाते
नशा करना बुरी बात है सबको हैं समझाते
रोज रात को दारू पीकर हैं घर आते
चिट्टे को रोकने वाले ही चिट्टा हैं बेचते
बर्दी की मारते धौंस सरेआम हैं धमकाते
जागरूक होकर भी जो
पढ़े लिखे बन जाते अनजान
समाज को होता जिससे नुकसान करते हैं ऐसे काम
कैसे कर सकते हैं
ऐसे जागरूक लोगों को जागरूक
अंदर से घिनौने
केवल सुनने में है इनका बड़ा नाम

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं जिला बिलासपुर हि. प्र.

क्या किसी की भूख की तस्वीर लेना जरूरी है?

> **सोशल मीडिया के युग में भलाई और करुणा अब मौन संवेदनाएँ नहीं रहीं, वे कैमरे के फ्रेम में कैद होती जा रही हैं। आज अधिकांश मदद 'लाइक्स' और 'फॉलोवर्स' के लिए की जाती है, न कि सच्ची इंसानियत से। सहायता अब एक 'कंटेंट' बन चुकी है और जरूरतमंद की गरिमा अक्सर इस प्रदर्शन की भेंट चढ़ जाती है। यह लेख हमें आत्मपरीक्षण की ओर ले जाता है—क्या हम वाकई मदद कर रहे हैं या बस सोशल मीडिया पर नेकी की तस्वीर गढ़ रहे हैं?**



आज का युग 'डिजिटल करुणा' का युग बन चुका है, जहाँ इंसानियत, परोपकार, और सहानुभूति जैसे मूल्य अब मौन संवेदनाओं की बजाय कैमरे की फ्लैश में दर्ज होते हैं। पहले जहाँ ₹नेकी कर दरिया में डाल₹ की परंपरा जीवित थी, अब वह बदलकर ₹नेकी कर, सोशल मीडिया पर डाल₹ हो चुकी है। इस लेख के माध्यम से हम इसी प्रवृत्ति की साहित्यिक और सामाजिक समीक्षा करेंगे। भलाई की भावना मनुष्य की सबसे पवित्र प्रवृत्तियों में से एक है। यह वह स्वाभाविक मानवीय गुण है जो हमें संवेदना, दया, और परस्पर सहयोग की ओर प्रेरित करता है। किन्तु आज के समय में यह गुण मंच पर आ चुका है—एक ऐसा मंच जहाँ तालियाँ हैं, टिप्पणियाँ हैं, और सबसे जरूरी, एक कैमरा है जो हर क्षण को ₹दृश्य₹ बनाता है।

एक समय था जब कोई वृद्ध भूखा दिखता, तो राह चलते लोग बिना कुछ कहे, बिना देखे, उसे कुछ खाने को दे जाते थे। आज वही द्रश्य होता है, लेकिन कैमरा पहले निकाला जाता है। भूखे की थाली से ज्यादा अहमियत उस एंगल की होती है, जिसमें वह थाली दिखाई दे। सेवा अब सीधी नहीं रही, वह एक स्क्रिप्टेड ऐक्ट में बदल गई है। आधुनिक मानव की आत्मा अब लाइक्स, शेयर, कमेंट्स की भूखी हो चली है। किसी की मदद करने के बाद हमें तसल्ली तब मिलती है, जब कोई कहे, ह्लवाह, आप तो बड़े नेकदिल हैं।ह्व पहले मदद करने के बाद मन को जो संतोष मिलता था, अब वह 'फॉलोवर्स बढ़ने' के संतोष से बदला जा चुका है। यह न केवल इंसानियत की आत्मा को खरोंचता है, बल्कि मदद पाने वाले की गरिमा को भी आहत करता है। वह व्यक्ति जिसे मदद मिली है, उसकी जरूरतें तो पूरी होती हैं, लेकिन उसकी निजता, उसकी आत्मसम्मान की परतें एक-एक कर सोशल मीडिया के सामने उतार दी जाती हैं।

सोचिए, अगर कोई कैमरा न हो, कोई दर्शक न हो, कोई ताली बजाने वाला न हो—क्या तब भी आप वही मदद करेंगे? यह प्रश्न हमारे भीतर झाँकने की जरूरत को इंगित करता है। करुणा यदि सच्ची है, तो वह गुमनाम रहेगी। यदि उसमें प्रदर्शन है, तो वह करुणा नहीं—डिजिटल ब्रांडिंग है। आज कई बार लगता है कि सहायता करना एक स्क्रिप्टेड इवेंट बन चुका है। वीडियो में सबसे पहले मदद मिलने वाले व्यक्ति की दयनीय स्थिति को दिखाया जाता है, फिर सहायता प्रदान की जाती है, और अंत में किसी नायक की तरह मददकर्ता का चेहरा। यह सब इतनी सफाई से किया जाता है कि वीडियो फिल्म जैसी लगती है—संगीत के साथ, टाइटल के साथ, और अंत में एक गूढ़-सा संदेश।

इस सारी प्रवृत्ति में सबसे अधिक पीड़ित होती है नैतिकता। किसी की जरूरत को दिखावा बना देना उस व्यक्ति के अस्तित्व पर हमला है। एक भूखे की भूख अगर कैमरे में रिकॉर्ड न हो तो क्या उसका दुख कम है? क्या दया केवल तभी योग्य है जब वह पब्लिक डोमेन में हो? यह नई नैतिकता सिर्फ दूसरों के सामने दिखने के लिए जीती है। अब 'कृपा' भी एक मुद्रा बन गई है—जिसे दिखाना पड़ता है, गिनाना पड़ता है। स्वार्थरहित सेवा का स्थान स्वार्थयुक्त प्रदर्शन ने ले लिया है। यह सब सुनकर अब साहित्यकार की लेखनी व्यंग्य से भर जाती है। कल्पना कीजिए एक दृश्य—एक व्यक्ति सड़क किनारे बेहोश पड़ा है। एक 'सोशल वॉरियर' आता है, और उसके साथ उसका कैमरामैन। सबसे पहले कुछ तस्वीरें, फिर एक वीडियो: हमने इनको उठाया, पानी पिलाया, एंबुलेंस बुलाई₹ और फिर कैप्शन: ₹हम सब मिलकर बदलाव ला सकते हैं।

कमेंट्स आते हैं—वाह भाई साहब, आप तो फरिश्ता हैं। किसी को यह नहीं सूझता कि क्या वह व्यक्ति कैमरे में आना चाहता था? क्या उसे अपने जीवन की सबसे कमजोर अवस्था में पब्लिकली दिखाया जाना चाहिए था?

आज नेकी भी एक पूंजी बन गई है। इसका बाजार भाव बन गया है। जो जितनी ज्यादा भलाई करता है (या कहें, दिखाता है), उसका सामाजिक रेटिंग उतना ही ऊँचा हो जाता है। कई बार यह भलाई राजनीतिक होती है, कभी कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (उरफ) के तहत होती है, और कभी व्यक्तिगत ब्रांड निर्माण के लिए। ऐसे में वास्तविक करुणा कहाँ छिप जाती है? क्या वह अब केवल कविता में जीवित रह गई है? क्या वह अब सिर्फ कबीर और तुलसी के दोहों में ही साँस लेती है? सोचने का समय आ गया है। मदद करने वाला बड़ा है या मदद पाने वाला? यदि कोई भूखा है, तो क्या उसकी भूख की तस्वीर लेना जरूरी है? क्या उसकी सहमति जरूरी नहीं? यदि हम उसे मदद देते समय उसकी पीड़ा को 'कंटेंट' बना दें, तो क्या हम वास्तव में सहायता कर रहे हैं या उसका उपभोग कर रहे हैं? आज जब भलाई की तस्वीरें सोशल मीडिया पर तैरती हैं, तो कहीं-न-कहीं वे समाज को एक नई दिशा दे रही हैं—एक ऐसी दिशा जहाँ सेवा भी दिखावे का अंग बन चुकी है। यह आवश्यक है कि हम पुनः आत्मपरीक्षण करें। भलाई मौन होती है, और उसका असर चुपचाप दिलों में उतरता है। यदि हमें सच में इस समाज को बेहतर बनाना है, तो जरूरत है कि हम बिना कैमरे, बिना मंच, और बिना स्वार्थ के किसी की मदद करें। नेकी कोई तस्वीर नहीं, वह तो संवेदना की वह रेखा । है जो दिल से दिल तक जाती है—बिना कोई सबूत माँगे।

पक्षियों के लिए आहार , ज्वार, बाजरा भी फसलों के साथ लगाए

गोरैया इंसानों की सदैव मित्र रही और घर की सदस्य भी ।क्यों ना हम गौरैया के लिए एवं अन्य पक्षियों के लिए,पानी ,दाना की व्यवस्था कर पुण्य कमाए ।एक बार इसको आजमा के देखों मन को कितना सुकून मिलता है। इन्ही कुछ आसान उपायों से फिर से घरों में फुदक सकती है हम सब की प्यारी गोरैया ।कई किसान अपने खेत के कुछ हिस्सों में ज्वार,बाजरा भी लगाते है उनका उद्देश्य गौरैया के लिए आहार के रूप में दाना प्रदान करना रहता है ।गौरेय्या की सेवा से मन को सुकून मिलता है ।दाना -पानी और रहने की सुविधा करने पर फिर से घरों में फुदक सकती है । हम सब की प्यारी गौरेय्या ।पक्षियों में अद्भुत शक्ति होती है,भूगर्भीय हलचलों जैउपसे प्राकृतिक आपदाओं से सचेत कर देते है साथ ही मालिक के प्रति वफादारी भी निभाते है जरुरी नहीं की उन्हें कैद करके रखा जाए पक्षियों के लिए दाना -पानी सकोरे में रखेक्योकि पृथ्वी रहने का जितना अधिकार इंसानों का है उतना अधिकार पक्षियों का भी है ।



संजय वर्मा 'दृष्टि'
मनावर जिला- धार(मप्र)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।
संपादक: पंकज धर द्विवेदी
संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com